संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१८
वर्ष : २८ अंक : १
(निरंतर अंक : ३०७)
पृष्ठ संख्या : ३६
(आवरण पृष्ठ सहित)



पने सद्‌गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी की आरती करते हुए पूज्यश्री



पूज्य संत श्री आशारामजी बापू



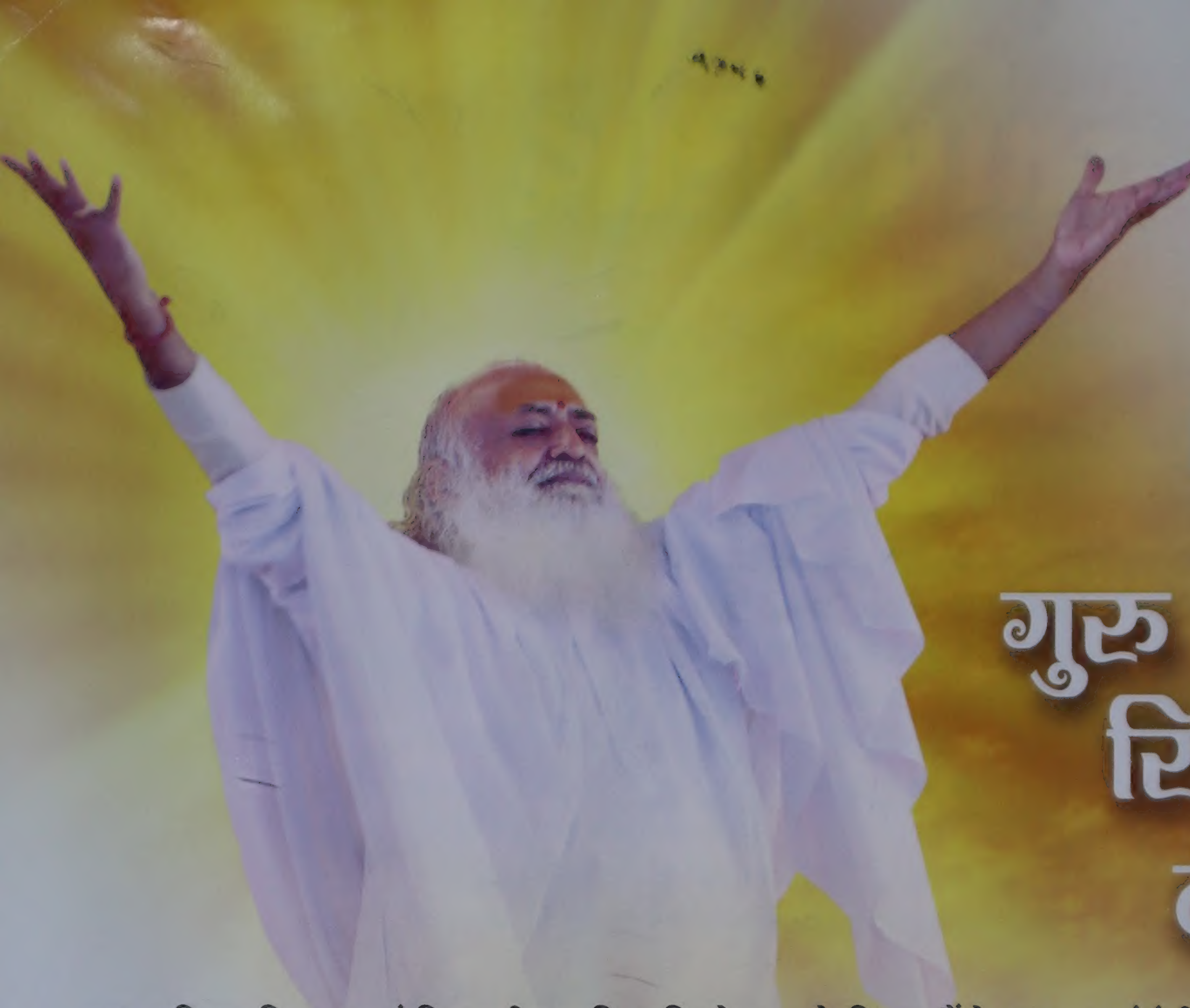
महर्षि वेदव्यासजी

गुरुपूर्णिमा : २७ जुलाई

शिष्य का परम मंगल करनेवाला महापर्व पृष्ठ १२

जो हरि हैं वे व्यास हैं, जो व्यास हैं वे ही तो हरि हैं। जो मेरे लीलाशाह प्रभु हैं वे ही ब्रह्म हैं। जो ब्रह्म हैं वे लीलाशाह प्रभु ही तो हैं। अपने सद्‌गुरु के लिए जिस शिष्य के हृदय में भगवद्भाव, ब्रह्मभाव है, समझ लो उसका जीवन सफल है। - पूज्य बापूजी



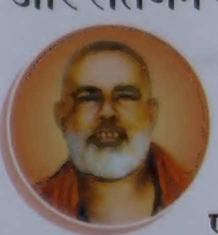




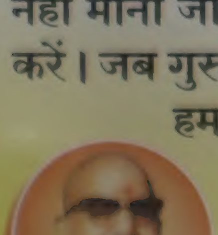
साँई श्री लीलाशाहजी महारा

गुरु सिरजे ते पार!

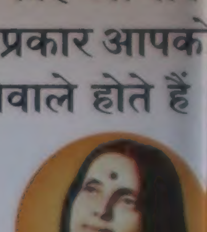
आध्यात्मिक विकास एवं दिव्य जीवन की प्राप्ति हेतु पूर्ण सत्य के ज्ञाता, समर्थ सद्गुरु की अत्यंत आवश्यकता होती है। जैसे प्रकाश बिना अंधकार का नाश सम्भव नहीं, वैसे ही ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के बिना अज्ञानांधकार का नाश सम्भव नहीं, सर्व दुःखों की निवृत्ति व परमानंद की प्राप्ति सम्भव नहीं। अतः शास्त्र और संतजन सद्गुरु की महिमा गाते-गाते नहीं अघाते।



ब्रह्ममूर्ति उड़िया बाबाजी के बड़े ही हितकारी वचन हैं : "गुरु में जब तक भगवद्बुद्धि नहीं की जाती, तब तक संसार-सागर से पार नहीं हुआ जा सकता। गुरु में मनुष्यबुद्धि होना ही पाप है। गुरु और भगवान में बिल्कुल भेद नहीं है - यही मानना कल्याणकारी है और इसी भाव से भगवान मिलते हैं। जब तक शिष्य यह न समझ ले कि 'गुरु ही मेरा सर्वस्व है' तब तक शिष्य का कल्याण नहीं हो सकता। उत्तम शिष्य चिंतन करने से गुरु की शक्ति प्राप्त कर लेते हैं, मध्यम शिष्य दर्शन करने से और निकृष्ट शिष्य प्रश्न करने से शक्ति प्राप्त करते हैं। हमारे यहाँ गुरु से प्रश्न करने की आवश्यकता नहीं मानी जाती। गुरु की सेवा करें और उनका चिंतन करें। जब गुरु में अनुराग है - गुरु हमारे हैं तो उनके गुण हमारे हैं ही।"



स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती कहते हैं : "आप अपने आचार-विचार को गुरु के उपदेश के अनुसार बनाइये। गुरु का जो गुरुत्व है वह भगवान का गुरुत्व है, उनके जो विचार हैं वे भगवत्-संबंधी विचार हैं और वे आपको संसार के बंधन से छुड़ानेवाले हैं। जहाँ कोई आचार-विचार, कोई संस्कार, कोई आकार, कोई प्रकार आपको बाँध नहीं सके, गुरु आपको वहाँ पहुँचानेवाले होते हैं उनका सम्मान कीजिये।"



सद्गुरु का स्थान अद्वितीय बताते हुए **आनंदमयी माँ** कहती हैं : "गुरु क्या कभी मनुष्य हो सकते हैं ? गुरु साक्षात् भगवान हैं। गुरु का स्थान दूसरा कोई नहीं ले सकता। गुरु में मनुष्यबुद्धि करना महापाप है।"



संत कबीरजी कहते हैं :

गुरु हैं बड़े गोविंद ते, मन में देखु विचार।
हरि सिरजे ते वार हैं, गुरु सिरजे ते पार॥

गुरुदेव गोविंद से बड़े हैं, इस तथ्य का मन में विचार करके देखो। हरि सृष्टि करते हैं तो प्राणियों को संसार में ही रखते हैं और गुरुदेव सृष्टि करते हैं (शिष्य के अंतःकरण में आत्मदृष्टि का सृजन करते हैं) तो संसार से मुक्त कर देते हैं।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू कहते हैं : "दुनिया के सब मित्र, सब साधन, सब सामग्रियाँ, सब धन-सम्पदा मिलकर भी मनुष्य को अविद्या (असत्य जगत को सत्य मानना व सदा विद्यमान परमात्मा को न जानना), अस्मिता (देह को 'मैं' मानना), राग, द्वेष और अभिनिवेश (मृत्यु का भय) - इन पाँच दोषों से नहीं छुड़ा सकते। सद्गुरुओं का सत्संग, सान्निध्य और उनकी दीक्षा ही बेड़ा पार करने का सामर्थ्य रखती है।"

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : १ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३०७
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१८
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
आषाढ़-श्रावण वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता :
'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org, www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

इस अंक में...

ऐसे ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का तो कितना-कितना आभार मानें !

- पूज्य बापूजी

सब एक ही चीज चाहते हैं, चाहे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी हों, इस देश के हों चाहे दूसरे देश के हों, इस जाति के हों या दूसरी जाति के हों। मनुष्य जाति तो क्या, देव, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, भूत, पिशाच भी वही चाहते हैं जो आप चाहते हैं। लक्ष्य सभीका एक है। प्राणिमात्र का लक्ष्य एक है, चाह एक है कि 'सब दुःखों की निवृत्ति और परमानंद की प्राप्ति।' साधन भिन्न-भिन्न हैं क्योंकि गलतियाँ भिन्न-भिन्न हैं। कोई सोचता है कि 'खाने-पीने से सुखी होऊँगा', कोई बोलता है : 'धन इकट्ठा करने से सुखी होऊँगा', कोई यह सोचता है कि 'सत्ता मिलेगी तब सुखी होऊँगा' लेकिन आद्य शंकराचार्यजी कहते हैं :



शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥

'यदि शरीर रूपवान हो, पत्नी भी रूपसी हो और सत्कीर्ति चारों दिशाओं में विस्तरित हो, मेरु पर्वत के तुल्य अपार धन हो किंतु गुरु के श्रीचरणों में (उनके सत्संग, सेवा व आत्मानुभव में) यदि मन आसक्त न हो तो इन सारी उपलब्धियों से क्या लाभ ?'

संत तुलसीदासजी कहते हैं :

गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई।
जौं बिरंचि संकर सम होई॥

ब्रह्माजी जैसा सृष्टि पैदा करने का सामर्थ्य हो जाय, शिवजी जैसा प्रलय का सामर्थ्य हो लेकिन जब तक सद्गुरु का, ब्रह्मवेत्ता गुरु का सान्निध्य न मिले तब तक यह भवनिधि, संसार-सागर तरना असम्भव है।

लख प्याला भर-भर पिये, चढ़े न मस्ती नैन।
एक बूँद ब्रह्मज्ञान की, मस्त करे दिन-रैन॥

वह ब्रह्मज्ञान की मस्ती जब तक नहीं आयी तब तक अनेक-अनेक साधन जुटाते हैं दुःखों की निवृत्ति के लिए, अनेक-अनेक साधन जुटाते हैं सुखों को थामने के लिए लेकिन लक्ष्य की खबर नहीं। उद्देश्य तो सबका एक है, लक्ष्य तो सबका एक है लेकिन लक्ष्य के साधन की खबर नहीं। लक्ष्य के साधन की जिनको खबर है उनको सद्गुरु कहते हैं।

जीव कीड़ी से लेकर कुंजर (हाथी) तक की योनियों में, मनुष्य से लेकर देव, गंधर्व, यक्ष आदि तक की योनियों में भटका किंतु उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हुई, अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं हुई।

ऐसे समस्त प्राणियों को उद्देश्य की पूर्ति का ज्ञान दिलाने की जिन्होंने व्यवस्था की ऐसे भगवान व्यासजी के नाम से यह आषाढ़ी पूनम व्यासपूर्णिमा के नाम से मनायी जाती है। ज्ञान कुल-परम्परा से एक से दूसरे की ओर बढ़ाया जाता है। पिता पुत्र को अपनी कुल-परम्परा का ज्ञान देता है, शिक्षक विद्यार्थी को शिक्षा देता है और सद्गुरु सत्‌शिष्य को अपना ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मरस देते हैं। ऐसा ब्रह्मसुख का मार्ग देना और उस मार्ग की विघ्न-बाधाओं को दूर करने की युक्तियाँ देना और बल भरना यह कोई साधारण व्यक्ति का काम नहीं है, ब्रह्मज्ञानी आचार्य का काम है।

भगवान वेदव्यास ज्ञान के समुद्र होने के साथ-साथ भक्ति के आचार्य हैं और विद्वत्ता की पराकाष्ठा हैं। ज्ञान तो ब्रह्मज्ञान...

ज्ञान मिड़ई[1] ज्ञानड़ी[2], ज्ञान तो ब्रह्मज्ञान।
जैसे गोला तोप का, सोलह सौ मैदान ॥

दुनिया के तमाम ज्ञान ब्रह्मज्ञान के आगे नन्हे हो जाते हैं। पेटपालू हैं अन्य सारे ज्ञान; वे नश्वर शरीर के हैं एवं उसे जिलानेमात्र के हैं लेकिन **शाश्वत ज्ञान क्या नश्वर शरीर को मार देगा ? नहीं। शाश्वत ज्ञान का मार्ग नश्वर शरीर को भी स्वस्थ, सुखी और सम्पन्न रखेगा क्योंकि शाश्वत ज्ञान सुमति का तो भंडार है।**

व्यासपूर्णिमा मनाने के दो पहलू

व्यासपूर्णिमा भगवान व्यासजी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का हमें स्मरण कराती है। जो तुच्छ संसार की चीजें देते हैं उनका भी अगर आभार नहीं मानते हैं तो कृतघ्नता का दोष लगता है तो ऐसे ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का तो कितना-कितना हम आभार मानें ! जितना भी मानें उतना कम है। व्यासपूर्णिमा मनाने के दो पहलू हैं, दो दृष्टिकोण हैं। एक तो ऐहिक, स्थूल दृष्टि से देखा जाय कि जिन्होंने हमारे लिए खून-पसीना एक किया, दिन-रात एक करके जिस परमात्मा को पाया, परमात्म-तत्त्व में जगे, उस परमात्म-तत्त्व की समाधि, ज्ञान, माधुर्य का परमानंद छोड़कर जन-जन के लिए न जाने कितने-कितने शास्त्रों, कितने-कितने उपायों एवं दृष्टांतों का सार निकाल के और कितना कुछ करके हमको इतना उन्नत किया, हम उनके प्रति कृतघ्नता के दोष से दब न मरें इसलिए हम कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए यह महापर्व मनाते हैं।

दूसरा आंतरिक रूप है कि वर्षभर में जो साधन-भजन हमने किये हैं, जो नश्वर के आकर्षण से बचकर शाश्वत की प्रीति की यात्रा की, उसमें जो कुछ उपलब्धियाँ हुईं उनसे आगे अब नया पाठ... जैसे विद्यार्थी हर साल कक्षा में आगे बढ़ता है ऐसे ही साधक को साधना में आगे बढ़ने के कुछ संकेत, कुछ शुभ संकल्प, शुभ भाव, शुभ उपाय, कुछ बढ़िया साधन मिल जायें। जैसा संग होगा ऐसा अंतःकरण को रंग लगेगा। तो बार-बार उन सत्पुरुषों का संग करना चाहिए।

इस गुरुपूनम का संदेश है कि गुरु के ज्ञान में चित्त को शांत करने का अभ्यास कीजिये। अग्नि में प्रवेश कर लिया तब भी वह काम नहीं होगा। स्वर्ग में प्रवेश कर लो चाहे प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति अथवा विश्वपति - किसी भी पद पर पहुँच जाओ फिर भी दुःख की अँधेरी रात नहीं मिटेगी, मृत्यु का भय नहीं जायेगा। जब तक आप गुरु-तत्त्व में स्थिर होने का अभ्यास नहीं करोगे तब तक आपके जीवन में साम्य विद्या[3] नहीं आयेगी और 'सब दुःखों की सदा के लिए निवृत्ति और परमानंद की प्राप्ति' - यह जीवन की माँग पूरी नहीं होगी। ❑

१. सभी २. नन्हे ज्ञान

३. सदा समत्व में रहने की कला सिखानेवाली विद्या

मन वश करने का उत्तम उपाय

जहां तैं मन उठ चले, फेरि तहां ही राख।
तहँ दादू लै लीन कर, साधु कहैं गुरु साख ॥



संत दादू दयालजी कहते हैं कि हे साधक ! सद्गुरु के बताये हुए ब्रह्मचिंतनरूप अभ्यास से उठ के मन विषयों की ओर जाय तब 'विषय-प्रवृत्ति दुःखद और ब्रह्मचिंतन परम सुखद है' इत्यादि गुरु-वचनों की साक्षी दे के पुनः ब्रह्मचिंतन में ही मन को लगा और उसी ब्रह्म में मनोवृत्ति लीन कर। संतजन भी मनोनिग्रह का यही उत्तम उपाय कहते हैं।

...तो बापूजी शीघ्र ही बाहर आयेंगे

१४ जून २०१८ को मुझे जोधपुर जेल में पूज्य बापूजी के दर्शन का लाभ मिला। मेरे सम्पर्क में देश-विदेश के कई साधक, भक्त हैं जो अपनी चिंता मेरे सामने रखते हैं कि 'बापूजी कब बाहर आयेंगे ? कैसे आयेंगे ?...' मैंने ये सभी सवाल पूज्यश्री के सामने रखे। बापूजी थोड़ी देर चुप हो गये, आँखें बंद कर लीं, फिर बोले : ''मैं तुम सबके संकल्प से आ जाऊँगा। मैं प्रसन्न हूँ और ठीक हूँ।''

एक भाई ने पूछा : ''बापूजी ! आप कैसे बाहर आयेंगे ?''

पूज्यश्री : ''तुम संकल्प करो, मैं बाहर आऊँगा।''

''बापूजी ! आप जब से जेल में आये हैं, भक्तजन तभी से संकल्प कर रहे हैं।''

पूज्यश्री ने कहा : **''मेरे सभी भक्त एक ही समय पर, एक साथ, एकजुट होकर संकल्प करेंगे तो मैं बाहर आ जाऊँगा।''**

''बापूजी ! भक्त तो करोड़ों हैं ! सारे कैसे एकजुट होंगे ?''

पूज्यश्री : ''इकट्ठे नहीं होना है। अपनी-अपनी जगह पर रहकर एक साथ, एक ही समय संकल्प करेंगे तो मैं बाहर आ जाऊँगा। इसका पालन सभी साधक, भक्त करें।''

फिर बापूजी 'नारायण... नारायण...' कहते हुए हमें जाने का इशारा करके अंदर चले गये।

छत्रपति शिवाजी महाराज के समय में हिरकणी नाम की एक महिला रायगढ़ किले का दरवाजा बंद होने से अंदर ही रह गयी थी। रात के घोर अँधेरे में किले के करीब २७०० फीट ऊँचे दुःसाध्य खड़े पहाड़ से नीचे उतरकर वह इस कारण घर पहुँच सकी क्योंकि उसने संकल्प किया था कि 'मुझे अपने नन्हे बच्चे को दूध पिलाने जाना है।' अगले दिन वह स्वयं हैरान हुई कि 'इतना ऊँचा पहाड़ मैं भला कैसे उतर गयी'!'

जब एक माता अपने बच्चे को दूध पिलाने के लिए संकल्प करके इतना कठिन कार्य करने में सफल हो सकती है तो हम करोड़ों शिष्य, भक्त अपने बापूजी को जेल से बाहर लाने के सामूहिक संकल्प की पूर्ति में सफल क्यों नहीं हो सकते ?

- नीलम दुबे

हम सभीका एक ही लक्ष्य व संकल्प है कि हमें जल्द-से-जल्द पूज्य बापूजी के दर्शन-सान्निध्य का लाभ मिले। और इसकी पूर्ति का साधन भी बापूजी के श्रीमुख से हमें मिला है। बस, अब सभीका थोड़ा-सा सामूहिक प्रयास हो तो सफलता अवश्य मिलेगी।

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है कि ''जो भगवान के भक्त हैं, गुरु के भक्त हैं, सदाचारी और धर्मात्मा हैं उनके संकल्प में अच्छा-खासा बल होता है। जैसे - गांधीजी के संकल्प में बल था। उन्होंने ठान लिया कि 'शोषक अंग्रेजों को देश से भगाना है।' किंतु सामने भी कोई अकेले व्यक्ति का नहीं वरन् कई अंग्रेजों का संकल्प था कि 'भारत हमारे नियंत्रण में रहे।'

इतने सारे लोगों के संकल्पों को काटना हो तो सामूहिक संकल्प चाहिए। गांधीजी समाज में पूर्णरूप से प्रचार में लग गये और रामनाम का आश्रय लेकर सबके संकल्प को एक माला के रूप में गूँथ लिया। साँईं लीलाशाहजी, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद, योगी अरविंद, देवराहा बाबा आदि महापुरुषों एवं सुभाषचन्द्र बोस, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय आदि क्रांतिकारियों ने भी देशवासियों में संकल्पशक्ति जगायी। आखिर उनका संकल्प फला। १९४७ में अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये यह दुनिया

जानती है । संकल्प को काटनेवाले विकल्प न हों तो संकल्प में अद्भुत सामर्थ्य आता है ।''

सिंधी भाइयों की सामूहिक पुकार पर हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए झूलेलालजी का अवतरण, मद्रास के भीषण अकाल में श्री राजगोपालाचार्य द्वारा करायी गयी सामूहिक प्रार्थना के फलस्वरूप मूसलधार वर्षा होना आदि प्रसंग हम सबने सत्संग में सुने ही हैं, जिनसे सामूहिक प्रार्थना, संकल्प की महिमा सुस्पष्ट हो जाती है ।

एक साथ एक ही समय पर

महासंकल्प

अहमदाबाद आश्रम में रोज सुबह-शाम सामूहिक संकल्प व जप किया जा रहा है ।

संकल्प : हम सभी सामूहिक संकल्प करते हैं कि आशारामजी बापू शीघ्र रिहा हों ।

मंत्र : ॐ ॐ ॐ बापू जल्दी बाहर आयें ।

भारत देश के भक्त **सुबह ७.२१ से ७.३६ बजे तक व शाम ७.४५ से ८ बजे तक** संकल्प-जप करें । विदेश के भक्त अपने-अपने स्थानीय (local) सुबह ७.२१ से ७.३६ बजे तक व शाम ७.४५ से ८ बजे तक संकल्प-जप करें ।

अपने-अपने घरों में या दुकान, कार्यालय अथवा यात्रा में - जहाँ पर भी हों, नियत समय पर उपरोक्त संकल्प-जप अवश्य करें । इसके अलावा भी जब भी सुमिरन हो, इसे करें ।

क्या हम बापूजी का सत्संग-सान्निध्य पाने के लिए इतना नहीं कर सकते ? जरूर करेंगे तथा अपने क्षेत्र के अन्य भक्तों को भी इस हेतु प्रेरित करेंगे । (**Mangalmay Official App** के द्वारा उपरोक्त संकल्प-जप के लाइव प्रसारण का लाभ लिया जा सकता है ।)



कलियुग में भी संत-शक्ति ही जीतेगी

– संत कृपारामजी, जोधपुर

संत आशारामजी बापू के जोधपुर केस का फैसला आया तो उसके बाद आस्तिक जनता की सारी प्रतिक्रियाएँ ऐसी आयी हैं जिनसे कानून पर प्रश्नचिह्न खड़ा होने लग गया है । आशारामजी बापू उनकी नजरों में पहले भी पाक-साफ थे, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे ।

मैं तो बापूजी का शिष्य नहीं हूँ लेकिन मैंने भी उनके कुछ साहित्य को पढ़ा है और जीवन में मार्गदर्शन पाया है । बापूजी के सत्संग से करोड़ों-करोड़ों साधकों का जीवन बदला है तो यह कोई मजाक नहीं है । बापूजी ने स्वयं ही अपने जीवन को सोना बना के दिखाया है इसीलिए उनके साधक भी चमकते हैं ।

एक बात स्पष्ट हो गयी है कि कोई-न-कोई ऐसी ताकत है जो इन संत से ईर्ष्या करती है और बदला लेने की भावना से कार्य कर रही है । त्रेतायुग में रामजी थे तो रावण भी था, द्वापर युग में श्रीकृष्ण थे तो कंस भी था और आज कलियुग आ गया है... लेकिन कोई बात नहीं, हमें यह भी देखना चाहिए कि रावण हारा था व श्रीराम जीते थे, कंस भी हारा था व श्रीकृष्ण जीते थे । और श्रीराम या श्रीकृष्ण ऐसे ही नहीं जीते थे, उन्हें भी बहुत संघर्ष करना पड़ा था । कलियुग में भी परिणाम अंत में यही आयेगा कि संत-शक्ति ही जीतेगी और आसुरी शक्ति का एक दिन नाश जरूर होगा ।

मैंने देखा है ऐसे कई जवानों को जो बापूजी का सत्संग सुन के, उनकी किताबें पढ़कर अपने जीवन को निखार रहे हैं । तो ऐसे संत के लिए अंशमात्र भी ऐसा-वैसा सोचना गलत होगा । हम सब बापूजी के ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकते हैं । ❒

॥ ईश्वरप्राप्ति का इरादा पक्का होता है तो विघ्न-बाधाएँ भी साधक को मजबूत बना देती हैं। ॥

लक्ष्यप्राप्ति के संकल्प व नाम-स्मरण में है अथाह सामर्थ्य

शास्त्र प्रसंग

भावार्थ रामायण में एक प्रसंग आता है। जब सीताजी की खोज करने गये वानर-भालुओं के दल वापस आये तब रामजी ने उनसे यात्रा का वृत्तांत पूछा। सब बताते गये। अंत में अंगद बोले : ''प्रभु ! खोजते-खोजते हम लोग ब्रह्मशाप से बंजर हुए एक ऐसे वन में पहुँचे जिसमें पेड़-पौधे, फल, पानी, जीव-जंतु कुछ भी नहीं था। वहाँ एक तपस्वी रहते हैं। उनका पुत्र विद्या के गर्व से घमंडी हो गया था और मद में चूर हो ब्रह्मज्ञानियों का तिरस्कार एवं निंदा करता था। इसलिए वन देवता ने उसका वध कर दिया। वह ब्रह्मराक्षस हुआ और वहीं रहने लगा।

पुत्र-वध की बात सुनकर तपस्वी ने वन को शाप दिया : ''जो भी इस वन में आयेगा, वह यहाँ से जा नहीं सकेगा।'' वन से बाहर निकलने के लिए हमने बहुत प्रयत्न किये परंतु सफल न हुए। भूख-प्यास से हमारे प्राण छटपटाने लगे परंतु हमने आपका नाम एवं सीताजी की खोज का संकल्प स्मरण किया तो हममें नयी ऊर्जा, साहस, धैर्य आया और उस स्थिति में भी हम बचे रहे।

हम उस वन में मार्ग ढूँढ़ते हुए यत्र-तत्र घूम रहे थे, तभी अचानक वह अत्यंत विशालकाय, विकराल ब्रह्मराक्षस हम लोगों को खाने आया। हमने उसके साथ युद्ध किया। आपके सुमिरन के प्रभाव से उस आततायी को मार गिराने में हम सफल हुए। आपके प्रति अनन्य निष्ठा एवं सम्पूर्ण समर्पण भाव रखनेवाले हनुमानजी के समक्ष मरने से उसका उद्धार हो गया।

पुत्र का उद्धार होने से तपस्वी ने संतुष्ट हो के वन को शापमुक्त कर दिया फिर भी भूख-प्यास के कारण हम लोग वन से बाहर नहीं निकल पा रहे थे। हनुमानजी जल पीने-पिलाने हेतु सबको एक गुफा में ले गये। राक्षस-वध होने से हमने राहत की साँस ली और आपके सुमिरन व लक्ष्यप्राप्ति के संकल्प में शिथिलता आयी तो उस अँधेरी गुफा में हम बुरी तरह से फँस गये। हम सभी बेहोश हो गये, केवल हनुमानजी नहीं हुए क्योंकि वे अंतर्बाह्य प्रभु-नाममय होने के कारण चेतना से परिपूर्ण थे एवं आपका मिला सेवाकार्य निभाने का लक्ष्य भी उनके स्मरण में था। उन्होंने वायुदेव से प्रार्थना करके सबके प्राण बचाये।''

जो हृदय में अपने इष्ट या सद्गुरु के प्रति श्रद्धा-प्रीति रखते हुए उनके नाम-स्मरणरूपी नौका और उनके दैवी कार्य रूपी पतवार का सुदृढ़ आश्रय ले के आगे बढ़ते हैं, वे भवसिंधु को भी पार कर जाते हैं तो अन्य विघ्न-बाधाओं की बात ही क्या ! यह ध्यान देने योग्य बात है कि जब तक सब वानर-भालुओं का नाम-स्मरण चलता रहा तब तक वे विकट विघ्न-बाधा में भी सुरक्षित रहे किंतु नाम-स्मरण एवं दैवी कार्य-पूर्ति का लक्ष्य शिथिल हुआ तो वे बेहोश हो गये। हनुमानजी इन दोनों बातों में सजग थे तो स्वयं भी रक्षित हुए एवं औरों की रक्षा कर सीताजी की खोजरूपी दैवी कार्य तथा परमात्मप्राप्ति में भी सफल हो गये। ❐

मनुष्य को भगवत्समर्पण के रास्ते पर चलकर अपने जीवन को दिव्य बनाना चाहिए। जीवन में अभिमान को निकट न आने दो। भगवान, गुरु, माता-पिता एवं शास्त्रों द्वारा अनुशासित जीवन ही श्रेष्ठ होता है।

– पूज्य बापूजी



पूज्य बापूजी का महापुरुषों के प्रति स्नेह

– स्वामी अक्षयानंदजी, हरिद्वार

हमारे बापूजी का हमारे गुरुदेव (ब्रह्मलीन संत श्री पथिकजी महाराज) से बहुत ही गहरा संबंध रहा है । हमारे गुरुजी परमार्थ आश्रम (हरिद्वार) में रहते थे। बापूजी वहाँ बीच-बीच में मिलने आते थे।

२० साल पहले की बात है । जब हमारे गुरुदेव ब्रह्मलीन हुए तब भक्तों में बहुत तरह की विचारधाराएँ पैदा हुईं कि 'गुरुदेव के शरीर को जल में प्रवाहित किया जाय कि समाधि बनायें अथवा क्या किया जाय ?...' हमारे पास तो एक इंच भी जमीन नहीं थी। परमार्थ आश्रम के अध्यक्ष स्वामी चिन्मयानंदजी महाराज ने कहा : ''यहीं समाधि बना दो।''

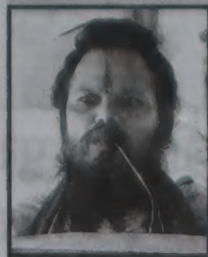
लगभग १०X१५ वर्ग फीट की जगह मिली। उस समय बापूजी का सत्संग-कार्यक्रम इंदौर में चल रहा था। परंतु वे कैसे, किस साधन से आये हमको पता नहीं लेकिन मौके पर वहाँ आये जहाँ समाधि दी जा रही थी। जब उन्होंने देखा कि यह जरा-सी जगह है तो मेरा हाथ पकड़ के बोले : ''चलो, चिन्मयानंद के पास चलते हैं।''

बापूजी चिन्मयानंदजी से बोले : ''देखो, ऐसे महापुरुष की समाधि के लिए इतनी जगह दो कि जहाँ कुछ लोग बैठ सकें, सत्संग-ध्यान हो सके।''

चिन्मयानंदजी सहर्ष राजी हो गये, बोले : ''जितनी जगह चाहो ले लो।''

५०x५० वर्ग फीट की जगह ली। बापूजी और हम सबने मिलकर ५-५ फावड़े मारे। अभी वहीं रोज सत्संग होता है। तो यह हमारे बापूजी की देन है जो इतनी बड़ी जगह हमको → मिल गयी। हम बापूजी के इस उपकार को भूल नहीं सकते, उनके प्रति हम कृतज्ञ हैं। उनका उपकार हमारी संस्था, ट्रस्ट के प्रति भी है।

महापुरुषों पर लांछन लगाने के कार्य अभी से नहीं, पुरातन काल से ही चले आ रहे हैं। संत आशारामजी बापू के साथ जो हो रहा है वह तो बिल्कुल गलत है ! इसका निराकरण होना चाहिए, सरकार को भी सोचना चाहिए। ❑



बापूजी निष्कलंक बाहर आयेंगे

४ जून को पाटेश्वर धाम के अधिपति महात्यागी रामबालकदासजी अपनी भक्त-मंडली के साथ अहमदाबाद आश्रम पधारे। उन्होंने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि ''यह स्थान पूज्य बापूजी की आध्यात्मिक ऊर्जा और तपस्या से आलोकित है। ऐसे पावन तीर्थ में आकर हम सभी अपने को धन्य महसूस कर रहे हैं ! पूज्य बापूजी के मार्गदर्शन में पूरे भारतवर्ष में गौरक्षा का महत्प्रयास चल रहा है तथा समाजोत्थान के और भी कई कार्य चल रहे हैं।

अभी कुछ दिन पहले जो हुआ, वह बहुत अन्यायपूर्ण है। यह तो पूरा-का-पूरा षड्यंत्र है। विदेशी शक्तियाँ चाहती हैं कि देश में जो भी आध्यात्मिक क्रांति उठे उसे दबाया जाय ताकि वह चेतना फिर न आ जाय जो भारत को विश्वगुरु पद पर स्थापित कर सके। पूरे भारत में सभी धर्मों, सम्प्रदायों के संतों को एक मंच पर लाने का प्रयास यदि कोई कर रहे थे तो वह बापूजी कर रहे थे। यह षड्यंत्रकारियों को खटकता था इसलिए उन्होंने यह आघात किया। हमें पूर्ण विश्वास है कि बापूजी निष्कलंक बाहर आयेंगे और पुनः पूरे समाज को जागृत करेंगे।'' ❑

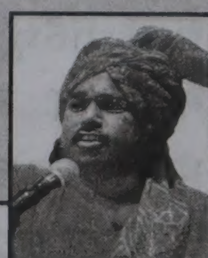
वास्तव में सच्चा स्वर्ग यहाँ है



– संत राजारामजी, जोधपुर

बापूजी के आश्रम में आकर बहुत अच्छा लगा। यहाँ आते हैं तो शांति मिलती है। निंदा किसकी नहीं हुई है ? परमात्मा को भी लोगों ने नहीं छोड़ा है ! मीडिया द्वारा काफी कुप्रचार हो रहा है पर बापूजी के आश्रमों में आ के देखते हैं तो पता चलता है कि वास्तव में सच्चा स्वर्ग यहाँ पर स्थापित है।

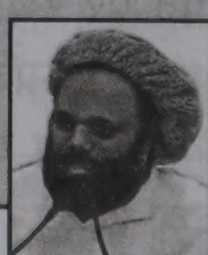
आजादी के बाद का सबसे बड़ा अन्याय



– हिन्दूभूषण श्यामजी महाराज

मैं पूज्य बापूजी के चरणों में वंदन करता हूँ। जो अन्याय संत आशारामजी बापू के साथ हो रहा है, वह आजादी के बाद का सबसे बड़ा अन्याय है। इतने बड़े पैमाने पर अन्याय, अत्याचार किसी अन्य संत के साथ हुआ होगा ऐसा मुझे नहीं लगता।

...वरना तो यह धरती नरक बन जायेगी



– बालयोगी संत धनंजयदासजी

हमारे पूज्य संत श्री आशारामजी बापू, जिनके लगभग ४२५ तो आश्रम हैं और न जाने कितने सेवाभावी औषधालय व अन्नक्षेत्र चलते हैं, जिन्होंने हमारे देश के लिए कितना कुछ किया, हमारे देश की संस्कृति को दूसरे देशों में लेकर गये, ऐसे संत पर कीचड़ उछाला गया; हमारे लिए डूब मरने जैसी बात है। इस धरती पर जब तक संत हैं, भगवान के भक्त हैं, राष्ट्रभक्त हैं तब तक यह धरती धरती है वरना तो यह नरक बन जायेगी। जगह-जगह अराजकता फैल जायेगी। पापाचार इतना बढ़ जायेगा कि यह धरती भी त्राहि-त्राहि पुकार उठेगी।

संत रामचैतन्य बापू को भावभीनी श्रद्धांजलि



अखिल भारतीय साधु समाज के महामंत्री संत रामचैतन्य बापू का पंचभौतिक शरीर दिनांक १८ जून २०१८ को पंचतत्त्वों में विलीन हो गया। उनके देह-विलय पर संत श्री आशारामजी आश्रम एवं समस्त साधक-परिवार की तरफ से भावभीनी श्रद्धांजलि।

आपने पूज्य बापूजी का करीबी सान्निध्य-लाभ पाया था। पूज्य बापूजी के प्रति आपके हृदय में गहरा प्रेम व श्रद्धा थी। बापूजी के बारे में बोलते समय कई बार आपकी आँखों से प्रेमाश्रु छलक पड़ते थे। आप कहते थे : ''संत आशारामजी बापू का समाज के प्रति कितना प्रेम है कि अपने शरीर की होली करके (पीड़ाएँ सह के) भी सबकी दिवाली कर देते हैं ! पिछले ५ दशकों से बापू स्वयं कष्ट सह के समाज के लिए उजाला करते आ रहे हैं।''

बापूजी पर हो रहे षड्यंत्रों से आप बहुत व्यथित थे। आप कहते थे : ''अरे, संत आशारामजी बापू ने कितना-कितना समाज को दिया है, कभी स्वार्थ का भाव नहीं रखा और जो उनके प्रति बुरा बोल रहे हैं, बुरा लिख रहे हैं, बुरा दिखा रहे हैं उनका भी बापू भला चाहते हैं। ऐसे संत के लिए जब कोई कुछ-का-कुछ कहे, उन पर कलंक लगाये तो हमें जागने की जरूरत है।''

आपका शरीर आज हमारे बीच नहीं है परंतु आपका संस्कृति व संतों-महापुरुषों के प्रति अपार प्रेम समाज के लिए चिरस्मरणीय रहेगा।

> सत्संग मनुष्य-जीवन की खुराक है। सत्संग के द्वारा ही सत्संग की महिमा का पता चलता है। – पूज्य बापूजी

तीन महत्त्वपूर्ण बातें

– पूज्य बापूजी

तीन बातें जो व्यक्ति नहीं जानता वह विद्वान होते हुए भी मूर्ख माना जाता है, धनवान होते हुए भी कंगाल माना जाता है और जिंदा होते हुए भी मुर्दा माना जाता है। कौन-सी तीन बातें ?

पहली बात : मृत्यु जरूर आयेगी। कहीं भी, कभी भी मृत्यु आ सकती है। कोई कहेगा : 'महाराज ! यह बात तो सब जानते हैं।'

नहीं, अभी जानते नहीं, केवल मानते हैं। साँप काटता है तो आदमी मर जाता है, यह बात आप जानते हो। अगर अभी इस सत्संग-पंडाल में कोई साँप आ जाय तो आप मुझसे पूछने के लिए खड़े नहीं रहोगे कि 'क्या करें ?' पहले भाग खड़े होंगे... इसी तरह मृत्यु को नहीं जानते, केवल मानते हो। 'एक दिन मरना है' यह मानते हो किंतु यह भी सोचते हो कि 'अभी थोड़े ही मरेंगे ! अभी तो यह करना है, वह करना है...।'

जैसे 'साँप के काटने से आदमी मर जाता है' यह बात जानते हो और साँप को देख के तुरंत भाग खड़े होते हो, ऐसे ही इस बात को अच्छी तरह से जान लो कि 'मृत्यु जरूर आयेगी।' 'मृत्यु कभी भी आ सकती है, कहीं भी आ सकती है' ऐसा निरंतर स्मरण रखो। ऐसा सोचने से ही तुम्हारा लोभ, अहंकार आदि घटने लगेगा।

दूसरी बात : बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। आप समय देकर कारखाना बना सकते हैं, आश्रम बना सकते हैं, डिग्रियाँ हासिल कर सकते हैं, हीरे-जवाहरात आदि संग्रह कर सकते हैं, गाड़ी, मोटर, बँगला खरीद सकते हैं लेकिन समय दे के आपने जो भी चीजें इकट्ठी की हैं उन सबको वापस करके भी आप उस समय का सौवाँ हिस्सा भी अपना आयुष्य नहीं बढ़ा सकते। ५० साल देकर आपने जो एकत्र किया वह सब-का-सब आप दे दें फिर भी ५० दिन तो क्या, ५ दिन भी आप अपना आयुष्य नहीं बढ़ा सकते। आपका समय इतना बहुमूल्य है। इसलिए अपने अमूल्य समय को व्यर्थ न गँवायें, सर्जनात्मक कार्य में लगायें, किसीके आँसू पोंछने में लगायें, ईश्वरप्रीत्यर्थ साधना-सेवा में लगायें।

तीसरी बात : जैसा संग वैसा रंग होता है। बड़ा व्यक्ति भी यदि छोटी मानसिकतावालों के बीच ज्यादा रहता है तो चमचों की खुशामद से उसका अहंकार उभरने लगेगा और छोटी-छोटी बातों में उसका मन फिसलने लगेगा। अतः बड़े व्यक्ति को चाहिए कि उससे भी जो बड़ा है ज्ञान में, भक्ति में, योग में, ईश्वर की दुनिया में, ऐसे व्यक्ति का संग करता रहे।

बड़े-में-बड़ा संग है संतों का संग, सत्संग। सत्यस्वरूप परमात्मा का संग किये हुए महापुरुषों का संग करने से, उनके अमृतवचनों को सुनने से एवं जीवन में अनुभव करने से मनुष्य स्वयं भी परमात्मा का संग पाने के काबिल हो जाता है। अतः सदैव संतों का सत्संग प्राप्त करें, सत्शास्त्रों का अध्ययन करें।

मृत्यु अवश्यम्भावी है एवं बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता – इस बात को जानकर जो व्यक्ति संतों-महापुरुषों का संग करता है, उनका सत्संग-श्रवण करता है एवं अपने जीवन में चरितार्थ करने का प्रयास करता है, वही वास्तव में अपना जीवन सार्थक करता है। ❑

शिष्य का परम मंगल करनेवाला महापर्व

(गुरुपूर्णिमा : २७ जुलाई)

- पूज्य बापूजी

पर्व मांगल्य

गुरुपूनम का उत्सव शिष्य तो मनाते हैं, गुरु भी अपने गुरु का पूजन करते हैं और ऋषि भी अपने ऋषिगुरु का पूजन करते हैं । गुरुपूनम उत्सव तो पार्वतीजी और शिवजी भी मनाते हैं, भगवान कृष्ण और राम भी मनाते हैं, मुनि भी मनाते हैं और हिन्दू भी मनाते हैं, मुसलमान भी मनाते हैं । यह गुरुपूनम का महोत्सव तपप्रधान... दोषों को मिटाने की प्रधानतावाला उत्सव है ।

यह जो गुरुओं की परम्परा है और सम्प्रेषण शक्ति से शिष्य का आंतरिक रूपांतरण है वह और किसी साधन से नहीं हो सकता है । संत तुलसीदासजी ने भी कहा है कि **'यह गुन साधन तें नहिं होई ।'** साधना तो करे पर साधना का फल यह है कि भगवान और भगवत्प्राप्त महापुरुषों में दृढ़ श्रद्धा हो जाय । उनकी कृपा से ही साधक आत्म-परमात्म स्वरूप को जान पाता है ।

गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मंगलम् ।

परम मंगल तो गुरु की कृपा से ही होता है, बिल्कुल पक्की बात है ! मेरा तो क्या, मेरे जैसे कितने ही संतों का अनुभव है । हम स्थूल शरीर (अन्नमय शरीर) में दिखते हैं लेकिन और ४ शरीर इसके भीतर हैं । इस अन्नमय शरीर के अंदर प्राणमय शरीर है फिर मनोमय शरीर है । उसके अंदर है विज्ञानमय शरीर । विज्ञानमय शरीर मतलब विज्ञानियों का विज्ञान नहीं, ५ ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि - इनको सामूहिक रूप से विज्ञानमय शरीर बोलते हैं । गुरु-शिष्य का संबंध मनोमय और विज्ञानमय शरीर से शुरू होता है, जिन्हें मौत नहीं मार सकती, परिस्थितियाँ जिन्हें दबोच नहीं सकतीं । मनोमय और विज्ञानमय शरीर से गुरु-शिष्य का लेन-देन शुरू होता है । अन्नमय और प्राणमय शरीर तो बाहर से आने-जाने आदि में काम आते हैं लेकिन बाद में शिष्य कितना भी दूर हो, गुरुजी कितने भी दूर हों पर मानसिक यात्रा में देर नहीं लगती । विज्ञानमय शरीर की गहराई में है आनंदमय शरीर । इन पाँचों शरीरों से पार सत्य है, चैतन्य है, परब्रह्म-परमात्मा है और पाँचों में उसकी सत्ता है । पाँचों बदल जायें तो भी वह नहीं बदलता । पाँचों मर जायें तो भी वह नहीं मरता है । वहाँ तक की यात्रा कराने का उद्देश्य गुरुपूर्णिमा महोत्सव का है ।

क्या है वास्तविक गुरुपूजा व गुरुदक्षिणा ?

- संत पथिकजी

मानस भज रे गुरुचरणं
दुस्तर भवसागर तरणम् ।

ऐहिक चमत्कारों की चर्चा में समय नष्ट न करो । प्रेम ईश्वर की ही किरण है । तुम प्रेम के कर्ता न बनकर सबमें, स्वयं में ईश्वरीय चेतना को देखने का अभ्यास बढ़ाओ और स्वयं प्रेम में तन्मय रहो । इष्ट (सद्गुरु, भगवान) को सद्भावों, सद्विचारों के सुमन अर्पण करो । यह तुम्हारी अपनी सामग्री है । हृदय में प्रतिष्ठित प्रभु की सुकर्मों के फलों से पूजा करो । स्वयं के व्यक्तित्व को इष्ट में खो देना ही उनकी पूजा है । गुरु के बताये हुए शाश्वत, निरंतर प्राप्त परमात्मा में स्थित रहो - यही गुरुदक्षिणा है । आस्था, विश्वास, उत्साह, धैर्य, साहस व प्रयत्न के द्वारा सिद्धि (सफलता) सुलभ होती है ।

गुरुसेवा सबको नमन, हरि-सुमिरन वैराग ।
ये चारों जब आ मिलें, समझो पूरन भाग ॥

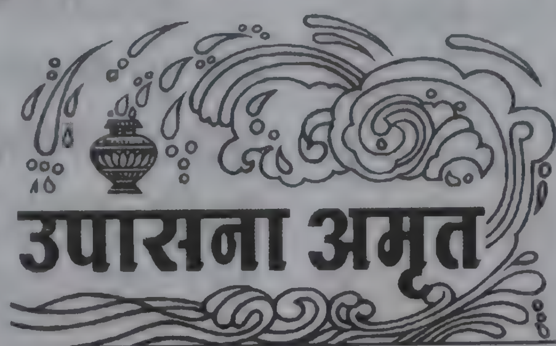
साधना में चार चाँद लगानेवाला अमृतकाल : चतुर्मास

(चतुर्मास : २३ जुलाई से १९ नवम्बर)

चतुर्मास की बड़ी भारी महिमा है, इन बातों को जानकर इस अमृतकाल का लाभ उठाइये :

(१) सद्धर्म, सत्संग-श्रवण, सत्पुरुषों की सेवा, संतों के दर्शन, भगवान का पूजन आदि सत्कर्मों में संलग्न रहना और सुपात्र हेतु दान देने में अनुराग होना - ये सब बातें चतुर्मास में अत्यंत कल्याणकारी बतायी गयी हैं।

(२) इन दिनों भूमि पर (चटाई, कम्बल, चादर आदि बिछाकर) शयन, ब्रह्मचर्य-पालन, उपवास, मौन, ध्यान, जप, दान-पुण्य आदि विशेष लाभप्रद होते हैं।



(३) जल में आँवला मिलाकर स्नान करने से पुरुष तेजवान होता है और नित्य महान पुण्य प्राप्त होता है।

(४) चतुर्मास में ताँबे के पात्र में भोजन विशेष रूप से त्याज्य है। इन दिनों धातु के पात्रों का त्याग कर पलाश के पत्तों पर भोजन करनेवाला ब्रह्मभाव को प्राप्त होता है, ऐसा शास्त्र में कहा गया है।

(५) इन दिनों में परनिंदा का विशेष रूप से त्याग करें।

(६) चतुर्मास में शादी-विवाह और सकाम यज्ञ नहीं होते। ये चार मास साधन-भजन करने के हैं।

(७) पद्म पुराण में आता है कि जो व्यक्ति भगवान के शयन करने पर विशेषतः उनके नाम का कीर्तन और जप करता है, उसे कोटि गुना फल मिलता है।

(८) चतुर्मास में भगवान विष्णु के सामने खड़े होकर 'पुरुष सूक्त' का पाठ करने से बुद्धिशक्ति बढ़ती है।

अपना आध्यात्मिक खजाना बढ़ायें

चतुर्मास की महिमा के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''जैसे किसान बोवाई करके थोड़ा आराम करता है और खेत के धन का इंतजार करता है, ऐसे ही चतुर्मास में आध्यात्मिक धन को भरने की शुरुआत होती है। हो सके तो सावन के महीने में एक समय भोजन करे, जप बढ़ा दे। हो सके तो किसी पवित्र स्थान पर अनुष्ठान करने के लिए चला जाय अथवा अपने घर में ही पूजा-कमरा बना दे। एक सुबह को नहा-धोकर ५ बजे पूजा-कमरे में चला जाय और दूसरी या तीसरी सुबह को निकले। मौन रहे, शरीर के अनुकूल फलाहार, अल्पाहार करे। अपना आध्यात्मिक खजाना बढ़ाये। 'आदर हो गया, अनादर हो गया, स्तुति हो गयी, निंदा हो गयी... कोई बात नहीं, हम तो करोड़ काम छोड़कर प्रभु को पायेंगे।' ऐसा दृढ़ निश्चय करे। बस, फिर तो प्रभु तुम्हारे हृदय में प्रकट होने का अवसर पैदा करेंगे।''

विशेष : चतुर्मास के दौरान सभी साधक मंत्रजप-अनुष्ठान का लाभ अवश्य लें। मौन-मंदिर व अनुष्ठान की सुविधा संत श्री आशारामजी आश्रमों में उपलब्ध है।

अधिक जानकारी हेतु **सम्पर्क करें** : साधक निवास कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद।

दूरभाष : (०७९) ३९८७७७२९

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) सत्यस्वरूप परमात्मा

(२) हयात ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों (३) साक्षी

पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग

प्रेरक प्रसंग

(गतांक से आगे)

कैसा वैराग्यपूर्ण जीवन !

जिसका लक्ष्य ही ईश्वरप्राप्ति हो, जिसका जन्म परोपकार एवं समाज में लोक-मांगल्य के बड़े-बड़े कार्य करने के लिए हुआ हो वह भला कैसे माया में फँस सकता है ! कैसा भी भोगप्रधान वातावरण उस पर अपना असर नहीं डाल सकता।

पूज्य बापूजी स्वयं अपने जीवन का एक प्रसंग बताते हुए कहते हैं : ''मेरा स्वभाव बचपन से ही विरक्त था परंतु मेरे परिवारवाले मुझे संसार में घसीटना चाहते थे इसलिए वे एक बार मुझे समझा-बुझाकर जबरन पिक्चर दिखाने ले गये थे ताकि वह पिक्चर देखकर मेरे मन में भी यह विचार आ जाय कि 'अपन भी शादी कर लें।'

उसमें एक गीत था। 'मेरा यार बना है दूल्हा, फूल खिले हैं दिल के। मेरी भी शादी हो जाय, दुआ करो सब मिल के।' ऐसा संगीत था कि दर्शक बैठे-बैठे डोल रहे थे लेकिन मेरे मन में विचार आया कि 'जिनकी शादियाँ हो गयी हैं वे सुखी हो गये क्या ? उनकी समस्याएँ हल हो गयीं क्या ? उनको ईश्वर मिल गया क्या ?'

अपने-आपसे जब मैंने ये प्रश्न पूछे तो उनका पिक्चर दिखाना व्यर्थ हो गया। वहाँ आँखें बंद करके बैठ गया। खूब रोना आ रहा था कि 'हे भगवान ! क्या यह सब दिखाकर अपनी माया में फँसाने के लिए तूने मुझे यहाँ भेजा है ? ये सब तो फँसा रहे हैं, तू भी फँसा रहा है क्या ? तू निकालेगा नहीं मुझे ?'

मुझे जो लेकर आये थे वे मेरे दोनों तरफ बैठे थे और बोलते : ''देखो न, क्या करते हो ?''

'आता हूँ जरा', ऐसा कहकर मैं बाहर चला गया और वहाँ भी खूब रोया। फिर वे बुलाने आये तो फिर अंदर आकर खूब रोया कि 'क्या ऐसे ही जिंदगी जायेगी ? ये तो प्लास्टिक की पट्टियाँ हैं। बाहर भी तेरी फिल्म और यह (संसार) भी तेरी फिल्म, तो तू कब मिलेगा ?'

ईश्वरप्राप्ति की आकांक्षा और तीव्र तड़प ने मुझे गुरु के द्वार तक पहुँचा दिया; गुरु में अडिग श्रद्धा कर दी और अपने-आप तक पहुँचा दिया।''

ऐसी थी स्वाध्याय की लगन !

पूज्य बापूजी को बचपन से ही स्वाध्याय की बड़ी रुचि थी। पूज्यश्री के सत्संग में आता है : ''किसीने मुझे कहा नहीं था शास्त्र-अध्ययन के लिए, कुदरती प्रेरणा हुई तो अपने जेब-खर्च के पैसों से भगवद्गीता ले आया और पढ़ता था। उसके छठे अध्याय पर मेरा चित्त ज्यादा ठहर जाता था। यह श्लोक मेरा बचपन का खूब पढ़ा हुआ है :

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः॥

भगवान कहते हैं : 'ब्रह्मचारी के व्रत में स्थित, भयरहित तथा भलीभाँति शांत अंतःकरणवाला सावधान योगी मन को रोककर मुझमें चित्तवाला और मेरे परायण हो के स्थित होवे।' **(गीता : ६.१४)**

प्रशांतात्मा - 'प्र' उपसर्ग है; आधिभौतिक, आधिदैविक व आध्यात्मिक - ये मानसिक शांतियाँ नहीं, परम शांति मिल जाती है।''

जो अपने जीवन का अनमोल समय व्यर्थ के उपन्यास, पत्र-पत्रिकाएँ, अश्लील चलचित्र व वेबसाइटें आदि पढ़ने-देखने में बरबाद करते रहते हैं, उनके लिए तो यह प्रसंग विशेष प्रेरणादायी है।

कीर्तन की भाव-सरिता

बालक आसुमल भगवत्प्रार्थना, कीर्तन व ध्यान के बड़े प्रेमी थे । वे भालकिया बस स्टैंड (अहमदाबाद) के पास स्थित रामजी मंदिर में भगवन्नाम-कीर्तन में बड़े ही तल्लीन हो जाते थे । और फिर ऐसे ध्यानस्थ हो जाते कि समय का भान ही नहीं रहता था कि कितना समय बीता ।

पूज्यश्री के सत्संग में आता है : ''बचपन में हम रोज मंदिर में जा के प्रार्थना व कीर्तन करते थे ।

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥

(अच्युताष्टकम् : १)

कीर्तन करनेवालों में भी हम सबके अगुआ थे ।... **'तुलसी मस्तक तब नवै धनुष-बान लो हाथ ॥'** यह गाकर उस समय 'जय सियाराम' कर लेते थे पर अब पता चला इसका रहस्य कि संत तुलसीदासजी ने आम जन का ज्ञान बढ़ाने के लिए ऐसा हठ ले लिया था - वे श्रीकृष्ण की मूर्ति देखकर बोले : ''ये तो बाँकेबिहारी हैं, मैं तो रामजी को प्रणाम करूँगा ।'' और वे बाँकेबिहारी रामजी बन गये । तो लोगों को सोचने का मौका मिला कि 'भई ! देखो, ऐसा भी हो सकता है !' व्यक्ति उस अच्युत की लीला देखने-समझने के बहाने भी आये और विश्रांति पाये । केवल बाहर के बाँकेबिहारी में ही रुक न जाय बल्कि उनके तत्त्वरूप का ज्ञान पा के मुक्त हो जाय । बाँकेबिहारी के बाह्य रूप की पूजा करने के साथ उनके उपदेश को भी समझे । वे उपदेश देते हैं कि

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥

'उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ । उनको भलीभाँति दंडवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़ के सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म-तत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे ।' **(गीता : ४.३४)**

कभी-कभी संतों के द्वारा भी वह अच्युत खेल करवा लेता है । कैसी व्यवस्था है उसकी !''

नन्ही उम्र में ऐसी नियमनिष्ठा !

पूज्य बापूजी की बचपन में ऐसी नियमनिष्ठा थी कि पूजा आदि का नियम किये बिना दूध तक नहीं पीते थे । पूज्यश्री के सत्संग-वचनों में आता है : ''मैं जब बच्चा था तभी से पीपल देवता को जल चढ़ाता और फिर उनके तने को ऐसे दबाता जैसे एक बच्चा अपने पिता की चरणचम्पी करता है । हरि ॐ ॐ... तू ही ॐ ॐ... शिवाय ॐ ॐ... करके फेरे फिरता, फिर नाचते-गाते, आनंद लेते-लेते घर तक आता । रास्ते में कहीं पीपल देवता मिल गये तो फिर मेरी गाड़ी वहाँ खड़ी हो जाती (मैं वहाँ खड़ा हो जाता), चक्कर लगाता और भाव से आलिंगन करता था । लोगों की नजर में मैं बावरा जैसा लगता था लेकिन मुझे तो बहुत फायदा हुआ । यह मुझे किसीने सिखाया नहीं था, कुटुम्ब-खानदान में लोग शनिवार को पीपल को जल चढ़ाते थे तो हम भी चढ़ाने लग गये लेकिन हमारी प्रीति हो गयी । अभी पता चलता है कि पीपल का पेड़ लगाने से कितना फायदा होता है । अन्य २४ वृक्ष लगाओ तो जितना पुण्य होता है उतना एक पीपल का वृक्ष लगाने से होता है ।''

अपने बच्चों के जीवन में भी बचपन से ही नियमनिष्ठा के सद्गुण का सिंचन करना चाहिए, जैसे - गुरुमंत्र या भगवन्नाम की इतनी माला तो जपनी ही हैं, गुरुदेव द्वारा दीक्षा के समय दिया गया नियम पूरा करना ही है, इतना समय तो सत्संग सुनना ही है... ऐसे ही सूर्य को अर्घ्य देना आदि नियमों के प्रति निष्ठा बढ़ायें । (क्रमशः)

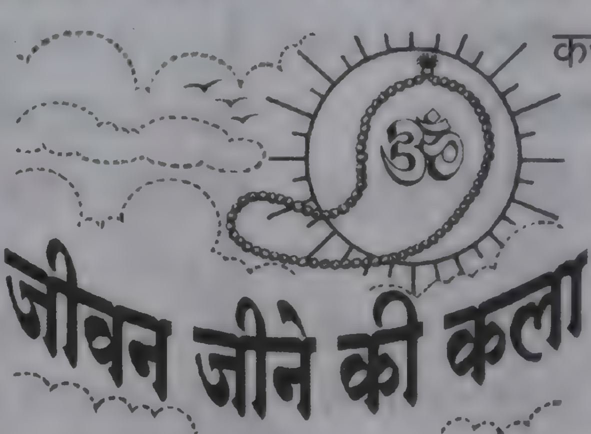
मंत्रजप में आनेवाले विघ्न व उनसे रक्षा के उपाय

(गतांक से आगे)

जप में मन नहीं लगता अथवा ध्यान-भजन करते समय मन इधर-उधर भाग जाता है, यह समस्या कई लोगों की रहती है। पूज्य बापूजी के सत्संग में इस समस्या के सुंदर उपाय आते हैं :

(१) यदि मन इधर-उधर जाय तो शुद्ध हवामान में नाक से लम्बे (गहरे) श्वास लो और मुँह से छोड़ो। ऐसा १० बार करो तो मन की चंचलता कम होगी। जप करते समय फिर मन इधर-उधर जाय तो आँखों को झपकाओ - आँखें खोलो-बंद करो, खोलो-बंद करो तो मन थोड़ा शांत होगा। कभी-कभार भगवान के नाम का जोर-जोर से जप करो, फिर धीमे स्वर में होंठों में जपो, फिर मानसिक जप करो। कभी-कभी भगवान से प्रार्थना करो कि 'मन नहीं लगता, अब हम क्या करें महाराज! हम तो नारदजी हैं आपके! आप बोलते थे : 'जाओ मथुरा' तो नारदजी मथुरा जाते थे फिर वापस द्वारका आते थे। आप बोलते : 'जाओ, जरा स्वर्ग का हाल जानकर आओ।' तो नारदजी स्वर्ग जाते फिर लौट के द्वारका आते थे। आप कहते : 'जाओ, जरा काशी का हाल जान के आओ।' तो वे काशी जाते फिर वापस द्वारका आते... ऐसे ही हमारा मन कहीं भी जायेगा, जाने की ५० जगहें हुईं पर आने की तो एक ही जगह! ५० बार मन एक जगह पर आये (भगवान में लगे) तो जैसे ५० अंकों से भी विद्यार्थी पास होता है ऐसे ही हम भी पास हो जायेंगे महाराज!

रोटी बनायेंगे फिर ठाकुरजी के निकट आयेंगे, खाना खायेंगे फिर ठाकुरजी के निकट आयेंगे, इधर-उधर की बात करेंगे फिर ठाकुरजी के निकट आयेंगे... तो जाने की जगहें तो अलग-अलग हैं लेकिन आपके पास आने की एक जगह! एक-एक अंक करके ५० अंक दे दीजिये नारायण! क्योंकि हम तुम्हारे हैं, तुम हमारे हो।'



(२) एक व्यक्ति आँखें बंद करके वर्षों से ध्यान कर रहा है और दूसरा व्यक्ति थोड़ा जप करता है, थोड़ा कीर्तन करता है - इस तरह जप में विविधता लाता है और फिर ध्यान करता है तो वह थोड़े दिनों में ही पुराने ध्यानवाले से आगे निकल जायेगा। कीर्तन करनेवाले को ध्यान करना जरूरी है लेकिन ध्यान करनेवाले को भी कीर्तन बड़ी मदद देता है।

(३) जो जरूरी कार्य है वह रोज-का-रोज कर लो। जो बिनजरूरी है, जिसको नहीं करना है - हटा सकते हो तो उसको दिमाग से हटा दो। इससे ध्यान-भजन में और जप में अच्छी तरह से मन लगेगा। जप करने बैठे और दुनियाभर के विचार आयें, 'यह करना है, वह करना है...' तो मन को बोलो, 'जब करना है तब करना है, अभी क्या! अभी तो जप कर।' (क्रमशः) ❐

उसने सब कुछ कर लिया

स्नातं तेन सर्वं तीर्थं दातं तेन सर्वं दानम्।
कृतं तेन सर्वं यज्ञं
येन क्षणं मनः ब्रह्मविचारे स्थिरं कृतम्॥

सारे तीर्थों में उसने स्नान कर लिया, सारा दान उसने दे दिया, सारे यज्ञ उसने कर लिये, जिसने एक क्षण भी ब्रह्मज्ञान में मन स्थिर किया।

संगठन की मजबूती का स्वर्णिम सूत्र

हमारा व्यवहार मधुर हो

व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में व्यवहारपूर्ति, विचारों की अभिव्यक्ति, ज्ञान के आदान-प्रदान तथा सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार हेतु ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अनमोल वरदान है वाणी । जीवन में व्यापक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए संगठित हो के कार्य करने की आवश्यकता होती है । संगठित होकर कार्यों को व्यापक रूप देने के लिए सुसंवादिता की अत्यंत आवश्यकता होती है । इसलिए सनातन धर्म के शास्त्रों एवं संतों ने मधुर वाणी एवं मधुर व्यवहार को व्यक्तिगत एवं सामूहिक साधना का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना है । भगवान ब्रह्माजी कहते हैं :

न तथा शशी न सलिलं न चन्दनं नैव शीतलच्छाया ।
प्रह्लादयति पुरुषं यथा हिता मधुरभाषिणी वाणी ॥

'पुरुष को चन्द्रमा, जल, चंदन और शीतल छाया वैसा आनंदित नहीं कर पाते हैं जैसा आनंद उसे हितकारी मधुर वाणी सुनने से प्राप्त होता है ।' **(भविष्य पुराण, ब्राह्म पर्व : ७३.४८)**

वेदों में भी मधुर वाणी एवं आचरण की प्राप्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गयी है :

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम् ।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसन्दृशः ॥

'हे मधुक (मीठा बोलनेवाले) ! आपको प्राप्त करके हमारा निकट का गमन मधुर हो और दूर का जाना मधुर हो । हमारी वाणी भी मधुरतायुक्त हो, जिससे हम सबके प्रेमास्पद बन जायें ।'

(अथर्ववेद : कांड १, सूक्त ३४, मंत्र ३)

किंतु इसमें भी सावधानी जरूरी है । सेल्समैन जैसी मीठी वाणी और व्यवहार बनाना यह कोई शास्त्रवर्णित मधुर व्यवहार नहीं है । शास्त्रों का उद्देश्य है - अपना और दूसरों का जीवन मधुमय, प्रभुमय, आत्मानंदमय बनाना । गांधीजी कहते हैं : ''जो व्यवहार तत्त्व (आत्मतत्त्व) के निकट नहीं ले जाता वह अशुद्ध और त्याज्य है ।'' (क्रमशः) ❑

बाल संस्कार केन्द्र-शिक्षकों के भाग्य का क्या कहना !

- पूज्य बापूजी

बाल संस्कार

बच्चों में ऐसी-ऐसी योग्यताएँ छुपी हैं और अपने पास ऐसी विधि है कि उनको पता ही नहीं चले इस प्रकार से अपन उनके अंदर के गेयर (सुषुप्त शक्तियोंवाले केन्द्र) बदल दें तो आनेवाले समय में भारत विश्वगुरु बनेगा, बिल्कुल पक्का ! अभी हजारों बाल संस्कार केन्द्र खुले हैं, सभी बिना वेतन पर चलनेवाले हैं । कितनी ऊर्जा है ! केवल उनकी ऊर्जा को सही दिशा देने की आवश्यकता है ।

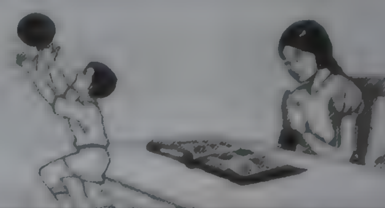
बच्चों को उन्नत करने का यह सारा पुण्य बाल संस्कार केन्द्रों के शिक्षकों के भाग्य में जमा होता है । इसलिए इनको हम पगार या रुपया-पैसा नहीं देते । ये तो अपने घर की रोटी खाते हैं, अपना किराया खर्चते हैं और बापू के दैवी कार्य का, सेवा का लाभ लेकर अपनी ७ पीढ़ियाँ तारने का काम करते हैं । रुपया-पैसा तो यहीं रह जाता है लेकिन जो ७ पीढ़ियाँ करोड़ों रुपयों के यज्ञों से नहीं तर सकतीं वे इस सेवाकार्य से तरती हैं । इस प्रकार ये कर्म तो करते हैं परंतु यह वासनानिवृत्ति का कर्म है इसलिए 'कर्मयोग' बन जाता है ।

✻ ✻ ✻

सद्गुरु वे माली हैं जो जीवनरूपी वाटिका को सुरभित करते हैं।



विद्यार्थी संस्कार



एक सूरदास बालक में से कैसे बने महान संत ?


संत शरणानंदजी

छोटी उम्र में ही एक बालक की नेत्रज्योति चली गयी। सारा परिवार दुःखी हो गया। बालक सोचने लगा, 'हाय ! मेरा जन्म लेना कितने लोगों के लिए दुःखदायी हो गया है।'

बालक जिज्ञासु प्रकृति का था। उसने संसार के नश्वर सुख-भोगों में दुःख-ही-दुःख देखा। उसके मन में प्रश्न उठा, 'क्या ऐसा भी कोई सुख होता है जिसमें दुःख शामिल न हो ?'

एक दिन उसके पिता किसीसे बात कर रहे थे। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने कहा : ''ऐसा सुख साधु-संतों के पास होता है जिसमें दुःख नहीं रहता।'' यह बात बालक ने सुन ली और उसे जीवन की राह मिल गयी। उसने निश्चय कर लिया कि 'मैं अवश्य साधु बनूँगा।'

वह बालक एक संत के पास गया, बोला : ''मुझे भगवान के रास्ते लगना है, सूरदास हो गया हूँ।''

संत बोले : ''ठीक है, बन जाओ साधु।''

बालक बोला : ''मानो, साधु बन गया फिर ?''

''भजन करो।''

''महाराज ! भजन करें तो किसका करें ?''

''भगवान का करो।''

''भगवान का भजन कैसे करें ?''

''बेटा ! 'राम राम' करो।''

बालक ने कहा : ''उसमें मेरी श्रद्धा नहीं।''

महाराज क्षणभर शांत हुए, बोले : ''तुम भगवान को मानते हो कि नहीं मानते हो ?''

बालक : ''भगवान को तो मानता हूँ।''

महाराज खुश हो गये, बोले : ''यार ! उसीके हो जाओ न जिसके हो। रामनाम पर श्रद्धा नहीं है तो 'मैं उसका हूँ, वह मेरा है' - इतना ही तो मानना है, बस ! चाहे फिर उसको शिव मानो, राम मानो, आत्मा मानो, सर्जनहार मानो... तुम उसीके होकर चुप बैठा करो।''

और उस 'चुप साधन' ने उनको ऐसी महायोग्यता में ला दिया कि वही सूरदास बालक संत शरणानंदजी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए और उनकी वाणी आज बड़े-बड़े संत भी पढ़ते हैं।

हम मंत्र का, गुरु का, संत-महापुरुषों का, भगवान का आदर करते हैं तो हम ही आदरणीय हो जाते हैं। तुम भी निश्चय करो कि 'मुझे भी परमेश्वर का साक्षात्कार करना है।' तो भगवत्कृपा से यह ध्येय भी तुम हासिल कर सकते हो। तुम्हारे भीतर परमात्मा की असीम शक्तियाँ छुपी हुई हैं।

ये पाँच मित्र सबके पास हैं...

- पूज्य बापूजी

विद्या शौर्यं च दाक्ष्यं च बलं धैर्यं च पञ्चमम्।
मित्राणि सहजान्याहुर्वर्तयन्तीह तैर्बुधाः॥

(१) विद्या (२) शूरता (३) दक्षता (४) बल (५) धैर्य

वैसे ये पाँच मित्र रहते तो सभी विद्यार्थियों के साथ हैं लेकिन अक्लवाले विद्यार्थी ही इनसे मित्रता करते हैं, इनका फायदा उठाते हैं, लल्लू-पंजू विद्यार्थी इनसे लाभ नहीं उठा पाते। जो बुद्धिमान हैं वे इनके द्वारा इस जगत में सारे कार्य करते हैं।

बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु 'बाल संस्कार केन्द्र'

बाल्यकाल से ही बच्चों में अच्छे संस्कार जगें तथा दिव्यता का झरना उनके जीवन में बहे, इस हेतु विश्व-मांगल्य की भावना से भरे पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की प्रेरणा से बाल संस्कार केन्द्रों की स्थापना हुई। यहाँ हँसते-खेलते महानता के संस्कार, अपनी योग्यताओं को विकसित करने के अवसर बच्चों को सहज में ही मिल जाते हैं। माता-पिता का आदर आदि संस्कारों के साथ बुद्धि का विकास, शरीर की तंदुरुस्ती, मन की प्रसन्नता तथा छुपी हुई शक्तियों को जागृत करने की कला उनको यहाँ सीखने को मिलती है।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के पावन उद्‌गार

बच्चे जैसा देखते हैं, जैसा सुनते हैं, देर-सवेर उसी दिशा में जाते हैं। गंदी फिल्में देखकर हमारे ऊँचे संस्कारवाले बच्चों के जीवन का ह्रास न हो और उनमें अच्छे संस्कार पड़ें इस हेतु से 'बाल संस्कार केन्द्र' प्रारम्भ हुए। देखते-ही-देखते १००-२००-५०० करते-करते हजारों की संख्या में बाल संस्कार केन्द्र फैल गये हैं, जहाँ बच्चों को निःशुल्क ऊँचे संस्कार मिलते हैं।

वास्तव में बच्चों में बुराई नहीं होती है, बुराई वे देख-देख के, सुन-सुन के सीखते हैं। वास्तव में तो बुद्धि सच्चाई और सज्जनता के पक्ष में ही रहती है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि बाल संस्कार केन्द्र में जानेवाले बच्चों को कुछ-न-कुछ सत्-संस्कार मिलते हैं। बच्चे माता-पिता का आदर करते हैं, सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हैं, तुलसी के पत्तों का सेवन करने से रोगों से बचते हैं और पवित्र संस्कारों के दृढ़ होने पर दुर्गुण-दुराचार से और दुर्गुणी-दुराचारियों के प्रभाव से भी बचते हैं। ❑

प्रेरक पंक्तियाँ

असफल भी सफल हो जाता है,
निर्बल भी सबल हो जाता है।
गुरु-वचनों में है गजब की क्षमता,
मुसीबतों में भी मार्ग निकल आता है॥

मेरे माता-पिता का सबसे बड़ा उपकार

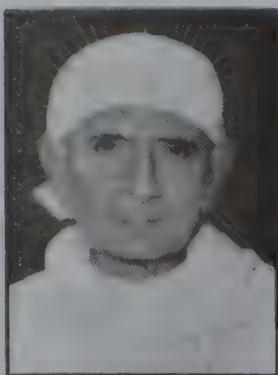


पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा प्राप्त करने से मेरे अंदर प्रतिभा का विकास हुआ है, जिससे मैं पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद, गायन आदि अन्य क्षेत्रों में भी आगे रहती हूँ। जनवरी २०१८ में मैंने 'इंटरनेशनल सोशल स्टडीज ओलिम्पियाड' में भाग लिया और देश-विदेश के हजारों बच्चों में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसमें मुझे स्वर्ण पदक तथा धनराशि देकर सम्मानित किया गया।

'ऋषि प्रसाद' में हम विद्यार्थियों के लिए भी बहुत उपयोगी बातें छपती हैं, जिनसे मुझे बहुत लाभ हुआ है। पूज्य बापूजी जैसे ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष, जो विद्यार्थियों की उन्नति का इतना ध्यान रखते हैं, उनसे दीक्षा दिलवाना - इसे मैं मेरे माता-पिता का मेरे ऊपर किया गया सबसे बड़ा उपकार मानती हूँ।

- मेधा कक्कड़, कक्षा ९
नोयडा (उ.प्र.)

आपकी स्वतंत्रता का आप दुरुपयोग न करें तो आप महान हो जायेंगे।



सच्ची स्वतंत्रता क्या है ?

तेजस्वी युवा

(स्वतंत्रता दिवस : १५ अगस्त)

भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज से किसी जिज्ञासु ने कहा : ''स्वामीजी ! आजकल स्वतंत्रता के नाम पर बहुत कुछ नहीं होने जैसा भी हो रहा है। यदि किसीको कुछ समझायें तो वह यह कह देता है कि 'हम स्वतंत्र भारत के नागरिक हैं अतः हम अपनी इच्छा के अनुसार जी सकते हैं।''

स्वामीजी ने कहा : ''ऐसे मूर्ख लोग स्वतंत्रता का अर्थ ही नहीं जानते। स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं है। हमारा देश १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्र हुआ परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें जैसा चाहें वैसा करने का अधिकार मिल गया है। सच्ची स्वतंत्रता तो यह है कि हम अपने मन-इन्द्रियों की गुलामी से छूट जायें। विषय-वासनाओं के वश में रहकर जैसा मन में आया वैसा कर लिया - यह स्वतंत्रता नहीं बल्कि गुलामी है। मनमानी तो पशु भी कर लेता है फिर मनुष्यता कहाँ रही ?

भले ही कोई सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने वश में कर ले, सभी शत्रुओं को मार डाले परंतु यदि वह अपने मन को वश नहीं कर सका, अपने भीतर छिपे विकाररूपी शत्रुओं को नहीं मार पाया तो उसकी दुर्गति होना निश्चित है।

एक दिन तुम अपने कमरे में गये और अंदर से ताला लगाकर चाबी अपने पास रख ली। दूसरे दिन तुम जैसे ही अपने कमरे में घुसे, किसीने बाहर से ताला लगा दिया और चाबी लेकर भाग गया। अब पहले दिन तुम कमरे में बंद रहकर भी स्वतंत्र थे क्योंकि कमरे से बाहर निकलना तुम्हारे हाथ में था। दूसरे दिन वही कमरा तुम्हारे लिए बंधनरूप बन गया क्योंकि चाबी दूसरे के हाथ में है।

इसी प्रकार जब तुम अपने मन पर संयम रखते हो, माता-पिता, गुरुजनों एवं सत्शास्त्रों की आज्ञा में चल के मन को वश में रखते हुए कार्य करते हो, तब तुम स्वतंत्र हो। इसके विपरीत यदि मन के कहे अनुसार चलते रहे तो तुम मन के गुलाम हुए। भले ही अपने को स्वतंत्र कहो परंतु हो महागुलाम... !

विदेशों में बड़ी आजादी है। उठने-बैठने, खाने-पीने अथवा कोई भी व्यवहार करने की खुली छूट है। माँ-बाप, पुत्र-पुत्री - सब स्वतंत्र हैं। किसीका किसी पर भी कोई नियंत्रण नहीं है किंतु ऐसी उच्छृंखलता से वहाँ के लोगों का कैसा विनाश हो रहा है, यह भी तो जरा सोचो। मान-मर्यादा, धर्म, चरित्र सब नष्ट हो रहे हैं। वे मनुष्य होकर पशुओं से भी अधम हो चुके हैं। क्या तुम इसे आजादी कहते हो ? कदापि नहीं, यह आजादी नहीं, महाविनाश है।

चौरासी लाख शरीरों में कष्ट भोगने के बाद यह मानव-शरीर मिलता है परंतु मूढ़ मतिवाले लोग इस दुर्लभ शरीर में भी पशुओं जैसे ही कर्म करते हैं। ऐसे लोगों को आगे चलकर बहुत रोना पड़ता है। संत तुलसीदासजी कहते हैं :

बड़ें भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा[1]।
पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ॥[2]
सो परत्र[3] दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोस लगाइ ॥

अतः मेरे भैया! स्वतंत्रता का अर्थ

(शेष पृष्ठ २४ पर)

१. मोक्षप्रद दरवाजा २. इसे पाकर भी जिसने परलोक नहीं सँवारा ३. परलोक में

महिला उत्थान

धन्य हैं ऐसी माताएँ !

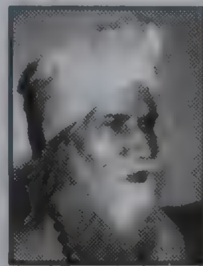
सन् १८९७ में जब पुणे शहर प्लेग जैसी खतरनाक बीमारी से जूझ रहा था तब लोगों की परेशानियाँ सुनने के लिए अंग्रेज शासन द्वारा वाल्टर चार्ल्स रैंड को अधिकारी के तौर पर नियुक्त किया गया । स्थिति ठीक करने के बजाय रैंड ने लोगों पर कष्ट ढाना शुरू कर दिया । सैनिक तलाशी के बहाने माताओं-बहनों को तंग करते, जूते पहन के ही हिन्दुओं के पूजाघरों में घुस जाते, जो चीजें अच्छी लगतीं उन्हें उठा के ले जाते, इतना ही नहीं कपड़े उतारकर तलाशी लेते । चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गयी । लोगों को इस अत्याचार से मुक्ति दिलाने हेतु चाफेकर बंधुओं ने अंग्रेज अधिकारी रैंड व आयर्स्ट को गोली मार दी ।

अंग्रेज सरकार ने इस मामले में दामोदर, बालकृष्ण व वासुदेव - इन तीनों चाफेकर बंधुओं को फाँसी पर चढ़ा दिया । इस घटना से सबकी आँखें भर आयीं । भगिनी निवेदिता (स्वामी विवेकानंदजी की शिष्या) इन शहीदों की माँ द्वारिकाबाई को सांत्वना देने पहुँचीं । उनका अनुमान था कि तीनों पुत्र मारे जाने से माँ आँसू बहाती होंगी । पर यह क्या ? एक माँ का ऐसा जवाब !

माँ ने कहा : ''बहन ! मैं क्यों दुःख करूँ ? मेरे तो तीनों राजहंस मातृभूमि की गोद में चिरनिद्रा में सो रहे हैं । ऐसे देशभक्तों की माँ बनने का सौभाग्य भगवान ने मुझे दिया । आपकी आँखों में ये मोह के आँसू क्यों ? काश ! मेरी कोई और भी संतान होती जिसे मैं देश को दे सकती !''

निवेदिता झुक पड़ीं उन माँ के चरणों में व बोलीं : ''धन्य हो माँ ! तुम्हें शत-शत प्रणाम !''

प्रेम की पूर्णता बिना तृष्णा का त्याग नहीं



- संत पथिकजी

हे ज्ञानस्वरूप देवियो ! जीवन-यात्रा करते हुए किसी प्रकार की अनुकूलता में तुम्हें ऐसा ही लगेगा कि मैं सुख प्राप्त कर रही हूँ । अनेक वर्षों से संयोग, लाभ का सुख तथा देखने, सुनने, स्वाद का सुख प्राप्त है परंतु विचार करो, कोई भी सुख पाँच मिनट भी तुम पकड़ नहीं सकीं । प्राणी सुख-उपभोग करते हुए थक जाता है, वृद्ध हो जाता है पर सुख को पकड़ नहीं पाता, अतृप्त ही रह जाता है । अनुभवी गुरुजन समझते हैं कि कामना की पूर्ति नहीं लेकिन उसकी निवृत्ति से सुख-शांति सुलभ हो जाती है । वासना, कामना पूर्ति की तृष्णा का त्याग प्रेम की पूर्णता बिना हो नहीं पाता ।

नारी-हृदय में जब किसीके प्रति पूर्ण प्रेम हो जाता है तब अपने सुख की कामना का त्याग अनायास हो जाता है । नारी-हृदय में प्रकट प्रेम ही हृदय को तृप्त करता रहता है, प्रेम के बदले में कोई चाह ही नहीं रहती । जब तक कोई कामना अथवा बदले में सुख पाने की इच्छा रहती है तब तक पूर्ण प्रेम प्रकट नहीं होता । यह गुरु-उपदेश माननीय है कि सभी प्रकार की कामना को अपने प्रेमास्पद की सेवा करते हुए त्यागकर साथ ही किसी भी देहादिक वस्तुओं में ममता, आसक्ति न रख के और अहं को आकाररहित देखते हुए अशांति से मुक्त साथ ही शाश्वत शांति से संयुक्त होना प्रत्येक के अधिकार में है । ❑

आसक्ति उत्पन्न होती है । प्रीति स्वाभाविक है । आसक्ति अविवेकसिद्ध है । विवेक नहीं है तभी आसक्ति हो जाती है । प्रीति विवेकसिद्ध है । विवेक यही है कि हम सत्-चित्-आनंदस्वरूप हैं । - पूज्य बापूजी

गुरुकृपा ने मारुति को बना दिया निसर्गदत्त महाराज



मार्च १८९७ की पूर्णिमा को महाराष्ट्र में एक लड़के का जन्म हुआ, नाम रखा गया मारुति। उसके पिता शिवरामपंत एक निर्धन व्यक्ति थे। मारुति का बचपन शिक्षा से लगभग वंचित रहा पर वह अत्यंत ही जिज्ञासु और मननशील प्रकृति का था। बाल्यकाल में वह गायों आदि की देखभाल करना, हल चलाना आदि अनेक कार्यों में अपने पिता का हाथ बँटाता था। मारुति की १८ वर्ष की उम्र में ही उसके पिता चल बसे।

संत चरित्र

उसने एक छोटा व्यवसाय शुरू किया। विवाह होकर एक बेटा व तीन बेटियाँ भी हुईं। अपनी मध्य आयु तक मारुति ने एक सामान्य मनुष्य जैसा ही जीवन व्यतीत किया। तत्पश्चात् मारुति के जीवन में सद्गुरु-मिलन का ऐसा सद्भाग्य जगा जिसकी उन्होंने कल्पना भी न की थी।

मारुति के एक मित्र थे यशवंतराव बागकर। वे ब्रह्मज्ञानी महापुरुष श्री सिद्धरामेश्वरजी के शिष्य थे। एक संध्या को वे उन्हें अपने सद्गुरु के पास ले गये। वह संध्या मारुति के जीवन में एक नया मोड़ ले आयी। गुरु ने उन्हें मंत्रदीक्षा दी और ध्यान के निर्देश दिये। अभ्यास के प्रारम्भ में ही उन्हें अनेक सूक्ष्म व दिव्य अनुभव होने लगे।

अब मारुति दुकान पर तो कार्य करते पर उनकी दृष्टि अब लाभ पर केन्द्रित न रहती। बाद में उन्होंने अपने परिवार तथा व्यवसाय को छोड़ दिया और साधु होकर केवल पैदल ही यात्रा करने लगे। वे हिमालय की ओर चल दिये। उन्हें विचार हुआ कि 'अपनी शेष आयु शाश्वत जीवन की खोज करते हुए वहीं बितायी जाय।' पर शीघ्र ही उन्हें अनुभव हुआ कि शाश्वत जीवन की प्राप्ति औ खोज कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसके लिए यहाँ-वहाँ (गुरु-निर्दिष्ट मार्ग से भिन्न किन्हीं एकांत गिरि-गुफाओं, वनों में) भटकना आवश्यक हो; यह तो उनके पास ही थी। गुरुप्रदत्त मार्ग व गुरुकृपा से 'मैं देह हूँ' - इस विचार से परे चले जाने पर उन्हें ऐसी अत्यंत आनंदकारी, शांतिपूर्ण औ महिमामयी नित्य अवस्था की प्राप्ति हो गयी जिसकी तुलना में अन्य सब कुछ अत्यंत तुच्छ हो गया। उन्हें आत्मोपलब्धि हो गयी। ये ही मारुति आगे चलकर श्री निसर्गदत्त महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए।

कैसे उन्हें सद्गुरु का मार्गदर्शन मिला और आत्मानुभव हुआ यह बताते हुए वे स्वयं कहते हैं : ''जब मैं अपने गुरु से मिला तो उन्होंने बताया कि 'तुम वह नहीं हो जैसा कि अपना होना तुम मान्य करते हो। इसका पता लगाओ कि तुम क्या हो ? 'मैं हूँ' की भावना का निरीक्षण करो, अपने वास्तविक स्वरूप का पता लगाओ।' **मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया क्योंकि उन पर मेरी श्रद्धा थी। मैंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने मुझे कहा था।** अपने अवकाश के सारे समय को मैं मौन में अपने-आपका निरीक्षण करते हुए व्यतीत किया करता था और इसके फलस्वरूप कितना अधिक अंतर आ गया और वह भी कितने शीघ्र !

अपने वास्तविक स्वरूप का साक्षात्कार करने में मुझे मात्र ३ वर्ष लगे। जब मैं ३४ वर्ष का था तब मेरी भेंट मेरे गुरु से हुई और जब मैं ३७ वर्ष का था तब मुझे आत्मज्ञान हो चुका था।''

ब्रह्मानुभव हेतु गुरुआज्ञा-पालन व गुरुनिष्ठा को अत्यंत आवश्यक बतानेवाले श्री निसर्गदत्त

महाराज ८ सितम्बर १९८१ को ब्रह्मलीन हुए।

निसर्गदत्त महाराज के अनुभव-वचन

✻ सान्निध्य का यह अर्थ नहीं कि एक ही वायु में सब साँस लें। इसका तात्पर्य होता है भरोसा और आज्ञाकारिता, गुरु की सदिच्छाओं को व्यर्थ न जाने देना। अपने गुरु को सदा अपने हृदय में रखो और उनके आदेशों को स्मरण रखो - यह वास्तविक सत्यनिष्ठा है। अपने सम्पूर्ण जीवन को अपने गुरु के प्रति तुम्हारी श्रद्धा और प्रेम की अभिव्यक्ति बना दो, यही यथार्थतः गुरु के साथ रहना है।

✻ गुरु का यही स्वभाव है कि वे प्रयास कभी नहीं छोड़ते। परंतु सफलता हेतु यह आवश्यक है कि उनका प्रतिरोध न किया जाय। संदेह रखने से, आज्ञाकारिता के अभाव से (लक्ष्यप्राप्ति में) विलम्ब हो जाना निश्चित ही है। यदि उनके प्रति शिष्य की आस्था और नम्रता हो तो अपने शिष्य में वे अपेक्षाकृत तीव्र गति से मौलिक रूपांतरण ला सकते हैं। गुरु की गहरी अंतर्दृष्टि तथा शिष्य की गम्भीरता - ये दोनों बातें आवश्यक होती हैं।

✻ गुरु सदैव तैयार होते हैं, बस तुम तैयार नहीं होते। सीखने हेतु तुम्हें तैयार रहना होगा अन्यथा तुम अपने गुरु से मिलकर भी, अपने गहन प्रमाद और हठधर्मिता के कारण उस अवसर को नष्ट कर सकते हो। मेरा उदाहरण देखो : मुझमें कोई विशेष योग्यता न थी पर जब मैं अपने गुरु से मिला तो मैंने उन्हें सुना, उन पर श्रद्धा रखी और उनकी आज्ञाओं का पालन किया।

✻ अपने गुरु से तुम्हें जो कुछ भी प्राप्त होता है उसमें प्रसन्न रहो और तब तुम संघर्ष किये बिना ही परिपूर्णता तक विकसित हो जाओगे।

✻ एक जीते-जागते मनुष्य के रूप में गुरु को पा सकना (शिष्य के लिए) एक विरला अवसर और एक महान उत्तरदायित्व होता है। ❒

गुरुसेवा के आगे ऐसा ऊँचा सुख भी न्योछावर !

(ऋषि प्रसाद जयंती : २७ जुलाई)

सत्शिष्य गुरुवचन, गुरुआज्ञा, गुरुसेवा के आगे समाधि के सुख जैसा ऊँचा सुख भी न्योछावर कर देते हैं, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है पूज्य बापूजी का जीवन। आत्मसाक्षात्कार कर जीवन्मुक्ति प्राप्त होने के बाद आपने अपने गुरुदेव भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी के श्रीचरणों में प्रार्थना की : ''आपने जो दिया है, उससे उऋण होने के लिए मुझे कोई आज्ञा दीजिये, कोई सेवा दीजिये।''

स्वामीजी ने कहा : ''सेवा करेगा ?''

बापूजी ने कहा : ''जी।''

''बस, जो मिला है उसमें टिको व दूसरों को जगाओ। आप (आत्म-अमृत) पियो, औरों को पिलाओ।''

मुक्तपुरुष होते हुए गुरुवचन को शिरोधार्य कर, एकांत की समाधि का सुख छोड़ के आपने अपना जीवन लोकहितार्थ आत्मज्ञान का प्रसाद बाँटने हेतु अथक परिभ्रमण करते हुए व्यतीत किया। आप अपने मित्रसंत श्री लालजी महाराज को पत्र में लिखते हैं : 'अब मौन और एकांत बहुत प्रिय लग रहा है तथापि ऋषि-परम्परा को समझनेवाले बहुत लोग कहते हैं कि 'अभी आपको अपनी संस्कृति का प्रचार करके डूबते हुए जनसमूह को संसाररूपी सागर से पार उतारने के लिए नौकारूप बनना अत्यंत आवश्यक है।' मुझसे तो अंतर की आज्ञा सब ठीक करा रही है।'

वह आत्म-अमृत, जिसे पाने एवं बाँटने के लिए पूज्य बापूजी ने आजीवन भगीरथ पुरुषार्थ किया, उसीको पीने-पिलाने का पुण्यलाभ 'ऋषि प्रसाद' व 'ऋषि दर्शन' की सेवा से जुड़े परोपकारी पुण्यात्माओं को सहज में ही मिल रहा है... कितना सद्भाग्य है ऐसे सौभाग्यशालियों का ! ❒

मोकलपुर के बाबा का प्रेरणाप्रद जीवन

- स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती

(गतांक का शेष)

बाबा मोकलपुर में ४० वर्षों से रहते थे पर किसीको पता नहीं चला कि ये मूलरूप से कहाँ के हैं, किस जाति के हैं और नाम क्या है ? हम लोगों ने आग्रह किया कि 'बाबा ! अपने जीवन की कुछ बातें बतायें।'

बाबा ने कहा : ''इस विशाल सृष्टि में एक व्यक्ति के जीवन का क्या महत्त्व है ? रोज अगणित कीड़े-पतंगे पैदा होते हैं और मर जाते हैं। कइयों के तो एक ही दिन में कई जन्म हो जाते हैं। मेरा जन्म और जीवन कोई वस्तु नहीं। मेरी कोई जाति-पाँति नहीं, मैं भगवान का हूँ, सब भगवान के हैं। जो सबकी जाति-पाँति है वही मेरी भी है।'' परंतु इतने से किसीको संतोष नहीं हुआ। तो बाबा ने हँसते हुए कहा : ''अच्छा भाई ! आज यही सही। जब तुम लोग यही सुनना चाहते हो तो सुनो।

विंध्याचल और प्रयाग के बीच किसी गाँव में मेरे माँ-बाप की जन्मभूमि थी। मेरे पिता सीधे और भगवद्भक्त थे। घरवालों ने उन्हें हिस्सा नहीं दिया, पागल समझ के घर से निकाल दिया। मेरी माँ भी उन्हींके साथ चल पड़ीं। वे विंध्याचल की धर्मशाला में रहते और भीख माँग के जीवन-निर्वाह करते। वहीं पर मेरा जन्म हुआ। जब मैं १२ वर्ष का था तब वे दोनों एक साथ ही इस संसार से चल बसे। सांसारिक दृष्टि से मैं अनाथ हो गया। भगवान के अतिरिक्त मेरा कोई और रक्षक नहीं रह गया। भीख से पला होने पर भी मैं भीख माँगना बुरा समझता था।

मैं यात्रियों की गठरी ढोकर पहुँचा देता था, वे मुझे कुछ दे देते थे। एक दिन साधुओं की एक जमात रामेश्वर की ओर जा रही थी। मैं भी उनके साथ चल पड़ा और वर्षों तक भ्रमण किया। एक बार नर्मदा-किनारे एक वृद्ध ब्रह्मचारी के दर्शन हुए। उन्होंने मुझे कृपा करके अपने पास रख लिया और विद्याध्ययन के साथ ही योगाभ्यास कराया। मैंने थोड़े ही दिनों में कुछ हिन्दी और संस्कृत की योग्यता प्राप्त कर ली। निरंतर जप होने लगा। विचार (आत्म-अनात्म विचार) की प्रवृत्ति बढ़ी और एकांत में मेरी वृत्तियाँ निरुद्ध रहने लगीं। १६ वर्ष तक अभ्यास करने के पश्चात् श्री ब्रह्मचारीजी ने मुझे विचरण करने की आज्ञा दे दी। यात्रा में मुझे अनेक प्रकार के अनुभव हुए।

मोकलपुर का स्थान चारों ओर से गंगा के गर्भ में है। मुझे यह पसंद आया और मैं ४०-५० वर्षों से यहीं पर रह रहा हूँ। यहाँ पर संत कच्चा बाबा की मुझ पर बड़ी कृपा हुई और अब मैं जैसा हूँ, जो हूँ, तुम लोगों के सामने हूँ। भगवान की सृष्टि में जैसे अनेक प्राणी हैं वैसे ही एक मैं भी हूँ। जब तुम ऊँची चौकी पर बैठा देते हो तब मैं उस पर बैठ जाता हूँ। नहीं तो नीचे पड़ा रहता हूँ। मेरा अनुभव क्या है ? - यह सब भगवान की ही लीला है, भगवान की ही कृपा है। सब भगवान-ही-भगवान हैं !'' □

(पृष्ठ २० से 'सच्ची स्वतंत्रता...' का शेष)

उच्छृंखलता नहीं है। शहीदों ने खून की होली खेल के आप लोगों को इसलिए आजादी दिलायी है कि आप बिना किसी कष्ट के अपना तथा समाज एवं देश का कल्याण कर सको। स्वतंत्रता का सदुपयोग करो, तभी तुम तथा तुम्हारा देश स्वतंत्र रह पायेगा अन्यथा मनमुखता के कारण अपने ओज-तेज को नष्ट करनेवालों को कोई भी अपना गुलाम बना सकता है।'' □

बस, यही समझ की भूल है

दूसरे के विषय में कोई बात जाननी हो तो जैसा लिखा होगा या जैसा कोई कहेगा वैसा मानना पड़ेगा किंतु अपने विषय में जानना हो तो स्वानुभव ही प्रमाण होगा । अतः अब सोचो कि कहीं लिखा है कि तुम दुःखी हो इसलिए अपने को दुःखी मानते हो या अपने दुःखीपने के तुम स्वयं साक्षी हो ? निष्कर्ष यही निकलेगा कि तुम इसलिए दुःखी हो क्योंकि तुम अपने दुःखी होने के स्वयं साक्षी हो । परंतु नियम यह है कि जो जिसका साक्षी होता है वह उसके (साक्ष्य के) गुण-धर्म से भिन्न होता है । तब जो तुम दुःखीपने के साक्षी हो वह तुम दुःखी कैसे हो सकते हो ?

विकार के बिना कोई दुःखी नहीं होता । विकार अर्थात् सड़न, एक से दूसरे में परिवर्तन । हमारी जो वस्तु जैसी थी वैसी नहीं रही, इसीसे तो हम दुःखी हुए न ! जो परिवर्तनशील है वह साक्षी नहीं है और साक्षी में विकार या परिवर्तन नहीं है । बुद्धि दिन में सहस्र-सहस्र रूप बदलती है । यह प्रिय-अप्रिय, सुख-दुःख, मेरा-तेरा आदि रूपों में बदलती रहती है । बुद्धि के इन सहस्र-सहस्र रूपों का मैं साक्षी हूँ । अतः मैं निर्विकार हूँ । किंतु निर्विकार में तो दुःख होता ही नहीं, तब यह दुःख कहाँ से आया ? यह भूल से, नासमझी से, अज्ञान से माना हुआ दुःख है । **प्रज्ञापराध एव एष दुःखमिति यत् ।** हम जिसे दुःख कहते हैं वह हमारी प्रज्ञा का अपराध है माने समझ का दोष है ।

जैसे कोई व्यापारी अपना पूरा हिसाब देखे बिना केवल आज के हिसाब को देखकर घाटा मान ले और दुःखी हो जाय तो यह उसकी समझ का दोष है; उसी प्रकार हम अनादि, अनंत अपने आत्मा (साक्षी) को तो देखते नहीं कि वह नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त ब्रह्म ही है, बस एक शरीर के विचार से अपना पूरा हिसाब मान लेते हैं । यही समझ की भूल है ।

यदि अज्ञान से दुःख न होता तो ज्ञान से वह दूर नहीं हो सकता था । यह नियम है कि जो वस्तु अज्ञान से होती है वह होती नहीं है और जो वस्तु ज्ञान से मिट जाती है, वह भी नहीं होती । रस्सी में रस्सी के अज्ञान से सर्प दिखता है और रस्सी के ज्ञान से सर्प नष्ट हो जाता है, अतः वह सर्प है ही नहीं । उसी प्रकार साक्षी के ब्रह्मस्वरूप के अज्ञान से साक्षी में दुःख, परिच्छिन्नता, अल्पज्ञता आदि प्रतीत होते हैं और उसके ब्रह्मत्व के ज्ञान से वे सब नष्ट हो जाते हैं; अतः दुःखादि भी वस्तुतः हैं नहीं, केवल उनका भ्रम हममें होता है । वेदांत भ्रमनिवर्तक ज्ञान को कल्पित मानता है । जैसे अविद्या कल्पित है वैसे ही अविद्या-निवर्तक ज्ञान भी कल्पित है । कल्पित की निवृत्ति कल्पित से ही होती है ।

आपस में सम सत्ता जिनकी,
लखि साधक-बाधकता तिनकी ॥

(विचारसागर)

जिनकी आपस में सम सत्ता होती है, उनकी आपस में साधकता और बाधकता भी होती है । जैसे मिट्टी और घट की सम सत्ता है, अतः मिट्टी घट की साधक है, कारण है । अग्नि और लकड़ी की सम सत्ता है । अग्नि काष्ठ की बाधक है क्योंकि वह काष्ठ को जला देती है । किंतु मरुभूमि के जल की और प्यास की सम सत्ता नहीं, अतः मरुस्थल का जल प्यास का बाधक नहीं, वह प्यास को दूर नहीं कर सकता । ❑

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी

सच्चे संतों (सद्गुरु) की सेवा की वेला



– गुरु अर्जुनदेवजी

हे मित्रो, सुनो ! मैं विनतीपूर्वक कहता हूँ कि (यह मनुष्य-जीवन) सच्चे संतों (सद्गुरु) की सेवा की वेला है। (अतः शरीर रहते सद्गुरु की सेवा, सत्संग, उनके आदेशानुसार भगवन्नाम-स्मरणादि के द्वारा) इस संसार में रहते हरिनाम की कमाई कर लो । रात-दिन आयु घट रही है; मन को गुरु के उपदेशों में लीन कर अपना भविष्य सँवार लो ।

इन्द्रियों की दासता से छुटकारा कैसे मिले ?



– परमहंस योगानंदजी

भगवत्प्राप्ति के बिना तुम स्वतंत्र नहीं हो । तुम्हारा जीवन आवेगों, मानसिक उतार-चढ़ाव, मनोवृत्तियों, आदतों और वातावरण के अधीन है । गुरु के उपदेश का पालन कर और उनके अनुशासन को मान के तुम इन्द्रियों की दासता से धीरे-धीरे छुटकारा पा लोगे ।

परब्रह्म से आयी परम्परा

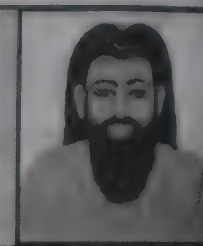


– संत सुंदरदासजी

परम्परा परब्रह्म तें, आयौ चलि उपदेश ।
सुंदर गुरु तें पाइये, गुरु बिन लहै न लेश ॥

'गुरु-परम्परा परब्रह्म से फूटकर आयी है । गुरु-उपदेश भी वहीं से चला आ रहा है । यह गुरु से ही मिलता है । गुरुकृपा के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता ।'

बिना गुरुभक्ति के आत्मज्ञान नहीं



– संत निश्चलदासजी महाराज

ईश्वर तैं गुरु में अधिक, धारे भक्ति सुजान ।
बिन गुरुभक्ति प्रवीण हूं, लहै न आतम ज्ञान ॥

'बुद्धिमान शिष्य को चाहिए कि गुरु की भक्ति ईश्वर की भक्ति से अधिक (बढ़कर) करे क्योंकि सब शास्त्रों में प्रवीण व्यक्ति भी बिना गुरु की भक्ति के आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता ।'

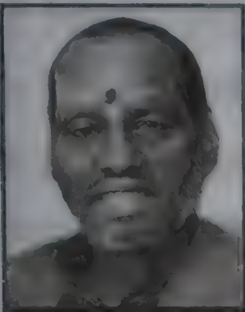
मेरे चित्त में अखंड आपका ही ध्यान है



संत बहेणाबाई (बहिणाबाई)

अपने गुरुदेव संत तुकारामजी के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए कहती हैं : ''हे गुरुदेव ! आप मेरी माता हो और मैं आपकी बालिका हूँ, आपके नाम का गुणगान कर रही हूँ। आप मेरी गौमाता हो, मैं आपकी बछिया हूँ और आपके ही नाम का हुंकार कर रही हूँ। आप मेरी हिरणीरूपी माँ हो तो मैं आपकी शावक हूँ और रात-दिन आपका ही ध्यान कर रही हूँ। आप मेरे चन्द्रमा हो तो मैं आपकी चकोर हूँ। आपको देखकर मुझे असीम आनंद हो रहा है । आप ही मेरे मेघ हो और मैं आपकी चातक पक्षी हूँ । मुझे सदैव आपके स्मरण से हर्ष हो रहा है । आप ही मेरे सज्जन, भगवद्-जन हो और मैं आपकी सान्निध्य-प्रेमी हूँ। मेरे चित्त में अखंड आपका ही ध्यान है । संत बहेणाबाई कहती हैं कि इस प्रकार श्री गुरु तुकारामजी मेरे प्राणसखा हैं, समस्त विश्व के मालिक हैं ।''

कैसे चुके गुरु-ऋण एवं क्या है असली धन ?



स्वामी मुक्तानंदजी

एक बार स्वामी मुक्तानंदजी से उनकी एक शिष्या ने पूछा : ''गुरुदेव ! एक बार आपने कहा था कि 'गुरु का ऋण चुकाया नहीं जा सकता।' क्या ऋण चुकाने का कोई भी उपाय नहीं है ?''

मुक्तानंदजी : ''जिन गुरु ने अपनी आंतरिक शक्ति देकर शिष्य का अंतर बदल दिया, बदल के अपने जैसा कर दिया फिर उस शिष्य के पास उसका है ही क्या जो दे के गुरु का ऋण चुका सके ? थोड़ी-सी जमीन, हजार-दो हजार रुपये अथवा दो-चार मीटर कपड़ा देकर चुकावे, कैसे चुकावे ? संत ज्ञानेश्वर महाराज इस विषय में कहते हैं कि ''कुछ भी देकर गुरु का ऋण चुकता नहीं। इसलिए मैं अपने को ही, अपनेपन को ही पूरा दे देता हूँ। 'मैं' को ही दे देने से फिर कुछ चुकाने की बात ही खत्म हो जाय। 'मैं'पना मिट जाय तो फिर चुकाना भी मिट जाय।''

असली धन और सच्ची दृष्टि

दूसरी शिष्या ने एक प्रश्न पूछा : ''बाबाजी ! जब मैं आश्रम में इतनी समृद्धि देखती हूँ तो अपने संस्कारों के कारण कभी-कभी मेरा मन क्षुब्ध हो जाता है क्योंकि मुझे मालूम है कि देश में कितनी गरीबी है। कृपा करके मेरा संशय दूर कीजिये।''

मुक्तानंदजी : ''यह तो तुम्हारे चित्त की दरिद्रता है। क्या भिखारीपन देखकर तुम्हारा चित्त खुश होता है ? मनुष्य को सविवेकी (विवेकसम्पन्न) होना चाहिए। मेरे मत से किसी भी आश्रम को परिपूर्ण होना चाहिए, आश्रम में कोई अभाव नहीं होना चाहिए। भिखारी वृत्ति का मनुष्य आश्रम में खराबी ही देखेगा, मध्यम वृत्ति का साधारण देखेगा और सम्पद् दृष्टि के मनुष्य को सब ठीक दिखेगा।

जिन्होंने बहुत जन्मों में बहुत दरिद्रता देखी उन्हें सम्पन्नता देखने में कष्ट भी होता होगा, जैसे अमीर को गरीबी देखने में कष्ट होता है। भिखारीपन परमात्मप्राप्ति का उपाय है क्या ? तुम्हारे पुराने संस्कार ही तुम्हें पीड़ा देते हैं। विवेकी के लिए केवल बाह्य सम्पद् भी भिखारीपना ही है। मैं कभी-कभी बिरला को भी भिखारी बोल देता हूँ। आत्मतृप्ति के बिना वह भी भिखारी ही है। तू इस सोना-चाँदी को सम्पद् समझती है या आत्मधन को ? आश्रम में क्या सम्पद् है - पेड़-पौधे, बिल्डिंग, हाथी या तुम लोग ?

मेरे मन में भी बड़ा संशय होता है कि आश्रम में तुम हाथी-घोड़े को सम्पद् समझती हो या जो तुमने पाया है, जिसके लिए तुम यहाँ रह रही हो, सब चैन-आराम भूलकर यहाँ रात-दिन काम (सेवा, साधना आदि) करती हो उसको सम्पद् समझती हो ? मेरे लिए तो आत्मतृप्तियुक्त मानव ही श्रीमंत है।''

उस शिष्या को सही दृष्टि प्राप्त हुई एवं उसके निमित्त से अनेक तत्सम वृत्तिवालों को अपना नजरिया निर्मल, विशुद्ध बनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। ❒

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

निम्न प्रश्नों के उत्तर हेतु यह अंक ध्यान से पढ़ें। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) साधना तो करे पर साधना का फल यह है कि भगवान और भगवत्प्राप्त महापुरुषों में .... हो जाय।

(२) जीवन में व्यापक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए .... हो के कार्य करने की आवश्यकता होती है।

श्री अष्टावक्र गीता पर पूज्यश्री के अमृत-वचन

शास्त्र दोहन

(गतांक से आगे)

मुनि अष्टावक्रजी कहते हैं :

सर्वत्रानवधानस्य न किञ्चिद्वासना हृदि।
मुक्तात्मनो वितृप्तस्य तुलना केन जायते ॥

'जो प्रपंच की किसी वस्तु पर अवधान नहीं देते (गौर से नहीं देखते अथवा चित्त का लगाव नहीं रखते); जिनका अंतःकरण कहीं बँधता नहीं, जो आत्मतृप्त हैं उनके हृदय में तनिक भी वासना नहीं होती। उनकी बराबरी किसके साथ की जा सकती है ? (अर्थात् किसीके साथ नहीं।)'

(अष्टावक्र गीता : १८.८९)

चन्द्रमा में इतनी शीतलता नहीं होती जितनी निर्वासनिक पुरुष के हृदय में होती है। चन्द्रमा अथवा बर्फ की शीतलता शोक, पाप और अज्ञान नहीं मिटाती लेकिन इच्छारहित महापुरुष की शीतलता तो शोक, पाप और अज्ञान नाशक है। अतः इच्छा-वासना की पूर्ति में मत लगो, इच्छा-वासना को निवृत्त करो। चन्द्रमा तो बाहर की तपन मिटाता है लेकिन वासनारहित महापुरुष हृदय की तपन, हृदय का अज्ञान, दुःख मिटाते हैं। निर्वासनिक पुरुष ऐसे सुख में स्थित होते हैं जहाँ त्रिलोकी के सुख तुच्छ हो जाते हैं; अमेरिका, यूरोप तो क्या है, स्वर्ग का सुख भी तुच्छ हो जाता है - ऐसा सुख पाना है इधर। निर्वासनिक पुरुष ईश्वरमय होते हैं। **तस्य तुलना केन जायते।** उनकी तुलना किससे की जा सकती है ? उनको कौन तौल सकता है ? उनको तौलने जाओगे तो आपका खोपडीरूपी तराजू लडखड़ा जायेगा।

मत करो वर्णन हर बेअंत है।
ब्रहम गिआनी की मिति[1] कउनु बखानै।
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै।

जो निर्वासनिक पद में हैं, सहज आनंद में हैं, उन्हें देखकर मोहनेवाली माया भी चली जाती है और हजारों-लाखों जीव निर्भार हो जाते हैं, निर्दुःख हो जाते हैं। निर्वासनिक नारायणस्वरूप जो ब्रह्मज्ञानी हैं, उनकी दृष्टि पड़ते ही फिजा (वातावरण) में ब्रह्मानंद छलकने लगता है। इससे बड़ी क्या पहचान है ? इससे बड़ा क्या अनुभव है ? नारायण... नारायण...। रागियों में रागी जैसे, लोभियों में लोभी जैसे, मोहियों में मोहियों जैसे, बालकों में बालकों जैसे, युवकों में युवकों जैसे, मजाकियों में मजाकियों जैसे, आहा... हा...

सर्वत्रानवधानस्य न किञ्चिद्वासना हृदि।
मुक्तात्मनो वितृप्तस्य तुलना केन जायते ॥

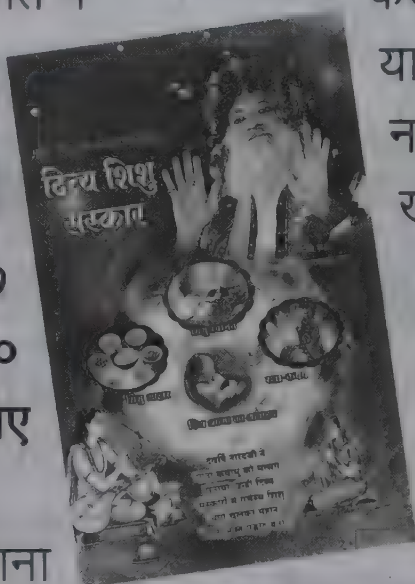
जिनकी कहीं कोई आसक्ति नहीं है - करने में भी आसक्ति नहीं और न करने में भी आसक्ति नहीं है, पुण्य में भी आसक्ति नहीं और पाप में भी आसक्ति नहीं, जिनके हृदय में कुछ भी पाने की वासना नहीं, जो भलीभाँति संतुष्ट हैं, उनकी तुलना किससे की जा सकती है ? किसीसे नहीं कर सकते। वे आप्तकाम, पूर्णकाम ब्रह्मवेत्ता निर्वासनिक पुरुष अतुलनीय हैं। ऐसे पुरुष धरती पर कभी-कभी, कहीं-कहीं दिखते हैं।

कैसा अमूल्य, अमोघ होता है ब्रह्मज्ञानियों का संग ! **दुर्लभोऽगम्योऽमोघश्च ॥** सद्गुरु का संग अमोघ होता है ! (समाप्त) ❐

१. परिमाण, माप, उनकी स्थिति का अनुमान

पुण्यात्मा, उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए

बृहस्पति, बुध, शुक्र, चन्द्र - ये शुभ ग्रह हैं। इनमें बृहस्पति तो अत्यंत शुभ ग्रह है। बृहस्पति जब बलवान होता है तब पुण्यात्मा पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। बलवान बृहस्पति जिसकी जन्म-कुंडली में होता है, उसमें आध्यात्मिकता, ईमानदारी, अच्छाई, सच्चरित्रता आदि गुण तथा विद्या व अन्य उत्तम विशेषताएँ होती हैं। इसलिए गर्भाधान ऐसे समय में होना चाहिए जिससे बच्चे का जन्म बलवान व उत्तम ग्रहों की स्थिति में हो। **वर्तमान समय में दिनांक ३ अगस्त २०१८ से २५ जनवरी २०१९ तक का समय गर्भाधान के लिए उत्तम है। इसके अलावा २७ दिसम्बर २०१९ से १५ फरवरी २०२० तक का समय तो गर्भाधान के लिए अतिशय उत्तम है।**



महान आत्माएँ धरती पर आना चाहती हैं लेकिन उसके लिए संयमी पति-पत्नी की आवश्यकता होती है। अतः उत्तम संतान की इच्छावाले दम्पति गर्भाधान से पहले कम-से-कम २-३ माह का ब्रह्मचर्य-व्रत अवश्य रखें, साथ ही अधिकाधिक गुरुमंत्र का जप करें। हो सके तो पुरुष ४० दिन के और महिलाएँ २१ दिन के २ या ३ अनुष्ठान करके उत्तम संतान हेतु सद्गुरु या इष्टदेव से प्रार्थना करें, फिर गर्भाधान करें।

गर्भाधान के लिए अनुचित काल

पूर्णिमा, अमावस्या, प्रतिपदा, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, पर्व या त्यौहार की रात्रि (जन्माष्टमी, श्रीराम नवमी, होली, दिवाली, शिवरात्रि, नवरात्रि आदि), श्राद्ध के दिन, प्रदोषकाल (१. सूर्यास्त का समय २. सूर्यास्त से लेकर ढाई घंटे बाद तक का समय), क्षयतिथि [देखें आश्रम की कर्मयोग दैनंदिनी (डायरी)] एवं मासिक धर्म के प्रथम ५ दिन, माता-पिता की मृत्युतिथि, स्वयं की जन्मतिथि, संध्या के समय एवं दिन में समागम या गर्भाधान करना सर्वथा निषिद्ध है। दिन के गर्भाधान से उत्पन्न संतान दुराचारी और अधम होती है।

शास्त्रवर्णित मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करना चाहिए, नहीं तो आसुरी, कुसंस्कारी या विकलांग संतान पैदा होती है। संतान नहीं भी हुई तो भी दम्पति को कोई खतरनाक बीमारी हो जाती है।

गर्भाधान के पूर्व विशेष सावधानी

अपने शरीर व घर में धनात्मक ऊर्जा आये इसका तथा पवित्रता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। बहनों को मासिक धर्म में भोजन नहीं बनाना चाहिए।

गर्भाधान घर के शयनकक्ष में ही हो, होटलों आदि ऐसी-वैसी जगहों पर न हो।

टिप्पणी : उत्तम समय के अलावा के समय में भी यदि गर्भाधान हो गया हो तो गर्भपात न करायें बल्कि गर्भस्थ शिशु में आदरपूर्वक उत्तम संस्कारों का सिंचन करें। गर्भपात महापाप है।

विशेष : ❋ उत्तम संतानप्राप्ति हेतु महिला उत्थान मंडल के 'दिव्य शिशु संस्कार केन्द्रों' का भी लाभ ले सकते हैं।

सम्पर्क : ९१५७३०६३१३

❋ उत्तम संतानप्राप्ति में सहायक विस्तृत जानकारी हेतु पढ़ें आश्रम व समिति के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध पुस्तक 'दिव्य शिशु संस्कार'।

सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३० ❐

उत्तम स्वास्थ्य हेतु कब व कितना पियें पानी ?

हमारे शरीर का दो-तिहाई (२/३) हिस्सा पानी से बना है। जल का प्रमुख कार्य पाचन की विभिन्न प्रक्रियाओं में शामिल होना तथा शरीर की संरचना का निर्माण करना होता है। पानी पीने की मात्रा व शरीर के द्वारा पानी निष्कासित होने की मात्रा का संतुलन बना रहता है तो शरीर के सभी अंगों को समुचित रूप से जल मिलता रहता है। अति अथवा अत्यल्प मात्रा में तथा अनुचित ढंग से पानी पीने से स्वास्थ्य की हानि होती है।

कई लोग गलतफहमी के शिकार हैं कि रोज ५ लीटर से ज्यादा पानी पीना चाहिए। किंतु यह मात्रा आयु, स्थान, प्रकृति, कार्य, आहार आदि पर निर्भर होती है व तदनुसार कम या अधिक हो सकती है। अतः जैसे भूख लगने पर ही भोजन करना चाहिए वैसे प्यास लगने पर ही पानी पीना चाहिए।



अधिक जल-सेवन की हानियाँ

अधिक पानी पीने से आमदोष की वृद्धि होती है, जिससे मंदाग्नि होती है। मंदाग्नि से रसादि सप्तधातु विकृत होते हैं, जिससे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। अति जल पीने के कारण तथा सुबह खाली पेट या रात्रि को सोते समय ठंडा जल पीने से आमदोष, मंदाग्नि व इनसे उत्पन्न होनेवाली अनेक बीमारियाँ घेर लेती हैं। आधुनिक शोधों के अनुसार भी अधिक मात्रा में जल का सेवन स्वास्थ्य के लिए गम्भीर समस्या बन सकता है, जिसे जल-विषाक्तता (Water poisoning) कहा जाता है।

पर्याप्त मात्रा में पानी पियें

प्यास लगने पर भी जो लोग टालते रहते हैं, पानी नहीं पीते उन्हें मुखशोष, अंगों में शिथिलता (थकान), कम सुनाई देना, ज्ञान-ग्रहण शक्ति की कमी होना, चक्कर आना, हृदयरोग आदि दुष्परिणामों का सामना करना पड़ता है इसलिए प्यास लगने पर आवश्यक मात्रा में पानी पियें।

इन बीमारियों में पानी कम पियें

पर्याप्त मात्रा में पानी पीना शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है पर कुछ विपरीत शारीरिक अवस्थाओं में पानी कम पीना अनिवार्य होता है। आयुर्वेद के अनुसार मंदाग्नि, खून की कमी (anaemia), जलोदर (ascites), भूख की कमी, आँखों के रोग, मधुमेह (diabetes), त्वचा-विकार, सर्दी-जुकाम, बवासीर, संग्रहणी, सूजन - इन व्याधियों में अधिक पानी पीना हितकर नहीं है। वृक्क अकर्मण्यता (renal failure) में अत्यल्प पानी पीना चाहिए।

भोजन के समय व बाद में पानी कब पियें ?

खाया हुआ अन्न पहले आमाशय में पहुँचता है। उचित समय पर उचित मात्रा में खाये गये अन्न को आमाशय में पाचकाग्नि प्रबल होकर सम्यक् रूप से पचाती है। अगर भोजन करते समय अधिक मात्रा में या भोजन के तुरंत बाद पानी पी लिया जाय तो पाचकाग्नि मंद हो जाने से पाचनक्रिया मंद हो जाती है और आहार आम (कच्चा रस) में रूपांतरित हो जाता है। अतः भोजन के डेढ़ से पौने दो घंटे बाद प्यास-अनुरूप पानी पीना हितावह है।

भोजन के पहले पानी पीने से व्यक्ति कृश होता है, मध्य में पीने से सम रहता है और अंत में पानी पीने से स्थूल होता है। भोजन के बीच में थोडा-थोड़ा गुनगुना पानी पीना जरूरी होता है।

आचार्य चाणक्य ने लिखा है :

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम् ॥
भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषप्रदम् ॥

'अजीर्ण में (गुनगुना) पानी औषधि →

आँखों की अच्छी सेहत के लिए

क्या करें (√)

(१) प्रातः हरी दूब पर टहलना, सूर्य को अर्घ्य देना, रात्रि को चाँद की तरफ एकटक देखना आदि से आँखें स्वस्थ रहती हैं।

(२) रात में अच्छी किस्म का सुरमा (संतकृपा सुरमा) लगाना अत्यंत लाभकारी है।

(३) भोजनोपरांत हाथ धोकर आँखों पर भीगे हाथ फेरना लाभदायी है।

(४) पलकें झपकाते रहना आँखों की रक्षा का प्राकृतिक उपाय है।

(संतकृपा सुरमा आश्रम के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध है।)

क्या न करें (X)

(१) सिर पर गर्म पानी न डालें तथा आँखों को गर्म पानी से न धोयें।

(२) अस्वच्छ हाथ या रूमाल आँखों पर न लगायें एवं दूसरों के चश्मे आदि का प्रयोग न करें।

(३) किसी भी प्रकार की एकाएक चमक, धूम्रपान, मद्यपान तथा अन्य नशीले द्रव्यों का सेवन आँखों के लिए अत्यंत हानिकारक हैं।

(४) बहुत कम या अत्यधिक रोशनी में पढ़ने या देखने के अन्य कार्य करने से आँखें दुर्बल हो जाती हैं।

बवासीर का अनुभूत इलाज

- पूज्य बापूजी

कुछ लोग कम्बल (गर्म आसन) पर लम्बे समय तक बैठे रहते हैं, फिर उन्हें बवासीर की बीमारी होती है। पहले पता नहीं था तो हम भी गर्म आसन पर लम्बे समय तक बैठ जाते थे। जब गुरुदेव (साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) के चरणों में आये तो साँईं ने बताया कि ''२ नींबू निचोड़कर उनके बीज फेंक दो। एनिमा-यंत्र के द्वारा वह रस नीचे से ले लो फिर ५-१० मिनट गुदाद्वार का संकोचन करके रखो।'' यह प्रयोग किया तो बवासीर की बीमारी गायब हो गयी। इसलिए आपको भी बता देता हूँ, किसीको बवासीर है तो आसानी से इस प्रकार मिट जाती है। अति बैठने से उत्पन्न गर्मी बवासीर करती है।

(अनुष्ठान आदि के दिनों में लम्बे समय तक गर्म आसन पर बैठना हो तो उस पर कोई सूती वस्त्र बिछायें।)

पाचनशक्ति बढ़ाने हेतु आसान व उत्तम प्रयोग

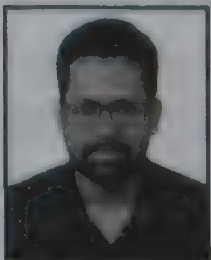
पाचनशक्ति बढ़ाने के लिए एक गिलास पानी में एक आँवले का रस व आधा चम्मच अदरक का रस मिलाकर उसे धीमी आँच पर उबालें। पानी आधा शेष रहने पर ठंडा करके उसमें शहद व थोड़ा-सा सेंधा नमक मिला दें और धीरे-धीरे चुसकी लेकर पियें। इससे मंदाग्नि दूर हो जायेगी, भूख खुलकर लगेगी तथा स्फूर्ति व ताजगी का



अनुभव होगा। अगर ताजा आँवला व अदरक न मिलें तो २ ग्राम आँवला चूर्ण और १ ग्राम सोंठ चूर्ण का भी उपयोग कर सकते हैं। (आँवला चूर्ण तथा आँवला व अदरक रस से युक्त आँवला-अदरक पेय व शरबत आश्रम व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध हैं।)

→ जैसा है। भोजन पूरा पचने के बाद (शुद्ध डकार आना, उत्साह लगना, शरीर हलका लगना - ये आहार पचने के लक्षण हैं।) पानी पीना बलप्रद है। भोजन के बीच-बीच में जल पीना अमृत के समान है। भोजन के बाद जल पीना विष के समान है।' **(चाणक्यनीतिदर्पण : ८.७)** (क्रमशः)

सेवा-अनुष्ठान से मिला महाबल



मेरी शादी ६ वर्ष पहले हुई थी परंतु जो भी संतान होती थी वह जीवित नहीं रहती थी। ऐसे मेरे तीन बच्चे मर गये, इस कारण मैं बहुत निराश, व्यथित तथा उत्साहशून्य हो गया था। तीसरी संतान को खोये अभी एक माह ही बीता था कि तभी 'ऋषि प्रसाद' की सेवा-योजना★ के माध्यम से मुझे अहमदाबाद आश्रम की वाटिका जैसी पूज्यश्री की दिव्य तपःस्थली में एक सप्ताह साधना करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहाँ का वातावरण बड़ा शांति व आनंददायी है तथा आध्यात्मिक स्पंदनों से ओतप्रोत है।

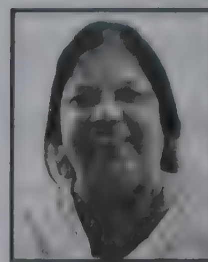
अनुष्ठान आरम्भ करने से मेरी चिंता, शोक, निराशा सब दूर होने लगे। प्रसन्नता व आत्मबल बढ़ने लगा। मुझ पर दुःखों का पहाड़ गिरा था पर ऋषि प्रसाद की सेवा एवं अनुष्ठान से मुझे उसे सहने तथा सेवा करने की शक्ति मिली। मुझमें नया उत्साह जगा कि 'परिस्थिति चाहे कैसी भी आ जाय, गुरुदेव के ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने की सेवा के लाभ से मैं वंचित नहीं रहूँगा।' अगर जीवन में बापूजी का सत्संग-ज्ञान न होता तो मैं न जाने क्या कर बैठता ! ऐसी दुःखद स्थिति से बाहर निकलने का मार्ग मुझे पूज्यश्री की कृपा से ही मिला है। और यह समझ भी मिली कि 'ध्यान, जप का फल यह नहीं है कि जीवन में दुःख नहीं आयेंगे, दुःख तो आयेंगे पर वे हम पर प्रभाव नहीं डाल सकेंगे, हमें दुःखी नहीं कर सकेंगे।'

ऋषि प्रसाद के सेवाधारियों से निवेदन है कि वे वाटिका में अनुष्ठान करने के इस सुअवसर का लाभ लेकर अपनी सेवा-साधना को अवश्य पुष्ट करें।

– विनय विश्वकर्मा

सचल दूरभाष : ७७२१०८८००० ⟶

गुरुकृपा से भयंकर दुर्घटना टली



मुझे पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा प्राप्त होने के बाद मेरा जप-ध्यान व 'ऋषि प्रसाद' की सेवा अखंडरूप से चल रही है। एक बार मैं और मेरे पति कार से जा रहे थे। बारिश के कारण सड़क फिसलाऊ हो गयी थी। गाड़ी तेज गति से जा रही थी। अचानक रेलवे क्रॉसिंग देखकर पति ने ब्रेक लगाये, जिससे गाड़ी अनियंत्रित होकर १८० डिग्री (ठीक विपरीत दिशा में) घूम गयी। सड़क की दोनों तरफ १०-१० फीट गहरी खाइयाँ थीं। यह देख मैं घबरा गयी और मेरे मुँह से बस इतना ही निकला : 'बापूजी ! बचाओ।' इतने में कार रुक गयी और हम भयंकर दुर्घटना से बच गये। अगर गाड़ी जरा-सी भी इधर-उधर हो जाती तो न जाने हमारा क्या होता ! बापूजी ने ही मेरी पुकार सुनकर हमारी जान बचायी।

मेरे पति पहले बापूजी को नहीं मानते थे पर दुर्घटना से बचने से वे बहुत प्रभावित हुए। बोले कि "मानना पड़ेगा, गुरुकृपा में शक्ति होती है। अब मैं भी बापूजी से मंत्रदीक्षा लूँगा।"

सभी गुरुभाई-बहनों को गुरुदेव से मंत्रदीक्षा के समय जो नियम मिले हैं उन्हें वे कभी न छोड़ें। सद्गुरुप्रदत्त नियम कष्ट और अनिष्ट से हमारी रक्षा करता है। इष्ट जब मजबूत होता है तो अनिष्ट नहीं होता।

– श्रीमती शीला सिंह

सचल दूरभाष : ९४५२४१९२५७

⟶ **★ इस योजना में ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन के कुल १०० सदस्य (ऋषि दर्शन का कम-से-कम एक सदस्य अनिवार्य) बनाने हैं। (खुशखबर ! अब योजना-अवधि दिवाली तक)**

हरिद्वार आश्रम में सम्पन्न हुआ महिला अनुष्ठान शिविर

२३ से २९ मई तक हरिद्वार आश्रम में महिला उत्थान मंडल का ७ दिवसीय 'चलें स्व की ओर...' जप-अनुष्ठान शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें महिलाओं की संख्या पूर्व के शिविरों से भी अधिक थी, जो इस बात को प्रत्यक्ष कर रही थी कि जिन्होंने संयममूर्ति पूज्य बापूजी के पवित्र जीवन को देखा है-समझा है, पूज्यश्री की अमृतवाणी को सुना-पढ़ा है, उन्हें किसीकी मनगढ़ंत बातों से बहकाया नहीं जा सकता। शिविर में स्वामी दिव्य चैतन्यजी, श्री परमेश्वरानंद सरस्वतीजी, स्वामी अक्षयानंदजी, साध्वी प्रज्ञानंदजी और स्वामी परमानंदजी ने उपस्थित होकर बापूजी का समर्थन किया। शिविर के दौरान शिविरार्थी बहनों ने ध्यान, यौगिक क्रियाओं, जप, कीर्तन, योगासन आदि के साथ पूज्य बापूजी के दुर्लभ विडियो सत्संग का लाभ लिया तथा शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक प्रसन्नता, व्यावहारिक कुशलता व आध्यात्मिक उन्नति की युक्तियाँ पायीं। जानते हैं कुछ शिविरार्थी बहनों के मनोभाव :

वैशाली चौहान, देहरादून : हमारे जैसे करोड़ों युवक-युवतियों को बापूजी ने संयम-सदाचार का महत्त्व बताया है। शिविर में हमने जाना कि सुखी, सम्मानित व सशक्त जीवन कैसे जिया जाता है।

कामिनी खैरनार, नासिक : शिविर में आकर हमारा प्राणबल बहुत बढ़ा है। हम सक्षम नारी बन रही हैं। घर में ऐसी साधना नहीं हो पाती।

दीपा वत्ता, सहारनपुर : पूज्य बापूजी से हमने जो पाया है वह शब्दों में बयान नहीं कर सकते। मैं मरने जा रही थी लेकिन गुरुद्वार पर आकर मैंने जीवन की दिशा पायी है।

प्रियंका शर्मा, मंडी : आज का युवावर्ग पाश्चात्य कल्चर की चपेट में, फैशन, फिल्मों,



नशे आदि की लत में आ चुका है। हमें पूज्य बापूजी से सही दिशा मिली है। हम जब से बापूजी से जुड़े हैं तब से जीवन में इतनी सादगी है, शांति है जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते।

वंदना शर्मा, सहारनपुर : उनका दुर्भाग्य है जिन्होंने बापूजी पर झूठे आरोप लगाये हैं। जिन बच्चियों को बापूजी मर्दानी बनाना चाहते हैं, उनके साथ क्या ऐसा करेंगे ?

सुशीला सिंह, जौनपुर : बापूजी को सजा सुनायी जाने के बाद से तो मुझमें और मजबूती आ गयी। मीडिया ने लोगों के मन में जो भ्रम भरना चाहा, उसको दूर करने की सेवा में मैं लग गयी। समाज को बापूजी की बेहद जरूरत है।



दीपज्योति पंजाबी, असम : मैंने बापूजी से दीक्षा नहीं ली है। पहले मुझे विश्वास नहीं होता था कि इंसान भी भगवान हो सकता है लेकिन अब पता चला है कि वास्तव में सभी भगवत्स्वरूप हैं। जो अपने आत्म-परमात्म स्वरूप को जान जाते हैं वे भगवत्स्वरूप हो जाते हैं। उनकी महिमा निराली है। मैं आध्यात्मिक मार्ग में और आगे बढ़ना चाहती हूँ। मेरे जैसे निगुरे बहुत लोग हैं। मैं बापूजी को प्रार्थना करती हूँ कि हमें जल्दी-से-जल्दी मंत्रदीक्षा मिले।

विद्यार्थी शिविरों का आयोजन

ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में देशभर में २२५ से अधिक स्थानों पर हुए 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। अनेक स्थानों पर ७ दिवसीय 'विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर' भी सम्पन्न हुए।

सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ

विघ्न-बाधाओं व पाप-ताप से रक्षा

- पूज्य बापूजी

पीपल का दर्शन, पूजन व स्पर्श बड़ा हितकारी है । व्यक्ति कितना भी मुसीबतों और पापों से घिरा हुआ हो, ३ पीपल के पौधे या कलमें ले और **'ॐ अश्वत्थ वृक्षराजाय नमः ।'** ऐसा १०८ बार जप करे एवं यह भावना करे कि 'हे पीपल देवता ! वृक्षों में राजा ! मैं आपको नमन करता हूँ ।' फिर हाथ से वे पौधे या कलमें ठीक जगह पर लगा दे । इससे उसके पाप-ताप कटेंगे, वह विघ्न-बाधाओं से बाहर आ जायेगा । यह तुम लोग कर सकते हो और दूसरों को भी प्रेरित कर सकते हो ।

पुण्यदायी तिथियाँ

२३ जुलाई : देवशयनी एकादशी (महान पुण्यमय, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदाता तथा पापनाशक व्रत ।), चतुर्मास व्रतारम्भ

२७ जुलाई : गुरुपूर्णिमा, विद्यालाभ योग, खग्रास चन्द्रग्रहण

३१ जुलाई : मंगलवारी चतुर्थी (सुबह ८-४४ से १ अगस्त सूर्योदय तक)

८ अगस्त : कामिका एकादशी (व्रत व रात्रि-जागरण करनेवाला मनुष्य न तो कभी भयंकर यमराज का दर्शन करता है और न कभी दुर्गति में ही पड़ता है ।)

१० अगस्त : गुरुपुष्यामृत योग (प्रातः ५-४४ से सूर्योदय तक)

१४ अगस्त : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से १५ अगस्त प्रातः ३-३० तक)

१७ अगस्त : विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सुबह ६-५२ से दोपहर १-१६ तक) (विष्णुपदी संक्रांति में किये गये जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल लाख गुना होता है । - पद्म पुराण)

(अधिक जानकारी आश्रम के कैलेंडर व डायरी में)

व्यापार में वृद्धि हेतु

रविवार को गंगाजल लेकर उसमें निहारते हुए २१ बार गुरुमंत्र जपें, गुरुमंत्र नहीं लिया हो तो गायत्री मंत्र जपें । फिर इस जल को व्यापार-स्थल पर जमीन एवं सभी दीवारों पर छिड़क दें । ऐसा लगातार ७ रविवार करें, व्यापार में वृद्धि होगी ।

ग्रहण की हानियों से बचकर कैसे उठायें करोड़ गुना लाभ ?

(खग्रास चन्द्रग्रहण : २७ जुलाई)

भूभाग में ग्रहण-समय : रात्रि ११-५४ से २८ जुलाई प्रातः ३-५० तक (पूरे भारत में दिखेगा, नियम पालनीय)

जानिये चन्द्रग्रहण-संबंधी महत्त्वपूर्ण बातें :

(१) चन्द्रग्रहण में ग्रहण के तीन प्रहर (९ घंटे) पूर्व से सूतक लगता है । सूतक व ग्रहण काल में भोजन नहीं करना चाहिए । बूढ़े, बालक और रोगी ग्रहण प्रारम्भ होने से डेढ़ प्रहर (४.५ घंटे) पूर्व तक खा सकते हैं ।

(२) सूतक (ग्रहण-वेध) के पहले जिन पदार्थों में कुश या तुलसी-पत्ते डाल दिये जाते हैं, वे सूतक व ग्रहण काल में दूषित नहीं होते ।

(३) भगवान वेदव्यासजी कहते हैं : 'सामान्य दिन से चन्द्रग्रहण में किया गया पुण्यकर्म (ध्यान, जप, दान आदि) एक लाख गुना और गंगाजल पास में हो तो एक करोड़ गुना फलदायी होता है ।'

(४) ग्रहण के समय गुरुमंत्र, इष्टमंत्र अथवा जो भगवन्नाम जपते हों उसका जप अवश्य करें, न करने से मंत्र को मलिनता प्राप्त होती है ।

(विस्तृत जानकारी हेतु पढ़ें आश्रम व समिति के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध पुस्तक 'क्या करें, क्या न करें ?')

सत्र २०१७-१८ की बोर्ड-परीक्षाओं में भी गुरुकुलों के उत्कृष्ट परिणाम

**अहमदाबाद, लुधियाना, इंदौर गुरुकुलों का १०वीं बोर्ड का परीक्षा-परिणाम १००% रहा।
अहमदाबाद सामान्य प्रवाह (हिन्दी व गुजराती माध्यम) तथा विज्ञान प्रवाह (हिन्दी माध्यम) और रायपुर (हिन्दी माध्यम) का १२वीं बोर्ड का परीक्षा-परिणाम १००% रहा।**

१०वीं राज्य बोर्ड परीक्षा-परिणाम

(PR = Percentile Rank)



र्या जोहरी	बाल गोविंद	सागर सोनी	विशाल कुमार	प्रीतम शर्मा	शिवम वर्मा	प्रियंक पटेल	पोखराज नाग	प्रेरणा कंदोई
ुधियाना	लुधियाना	रायपुर	लुधियाना	अहमदाबाद	अहमदाबाद	अहमदाबाद	अहमदाबाद	रायपुर
४.३१%	९०.५०%	८९.५०%	८९.५०%	९८.८३ PR	९८.४८ PR	९८.१४ PR	९७.७७ PR	८५.५०%



म देवांगन	प्रसाद देवपुरकर	अविनाश चौधरी	संजय यादव	मनीष प्रजापति	राजू कुमार	शुक्लेश्वर जाधव	गोविंद यादव	ओम पटेल
रायपुर	अहमदाबाद	अहमदाबाद	लुधियाना	अहमदाबाद	लुधियाना	धुलिया	अहमदाबाद	सूरत
४.५०%	९७.२३ PR	९६.६९ PR	८३%	९५.७४ PR	८१%	८१%	९५.४५ PR	९४.६५ PR

१०वीं सीबीएसई बोर्ड परीक्षा-परिणाम



शांत पचौरी	श्याम पटेल	हरिओम गुप्ता	नितिन कुमार	दीपिका राणा	कृतिक गहलोत	अंकुश रावत	यश अग्रवाल	रिया चौधरी
आगरा	इंदौर	छिंदवाड़ा	आगरा	आगरा	इंदौर	जयपुर	छिंदवाड़ा	आगरा
९१.६०%	९१.४०%	९१.२०%	९०.६०%	९०.२०%	९०%	८९.६०%	८८%	८६.८०%



ौरव गोला	ओम चौहान	नितेश जाधव	सुदीक्षा कुमारी	शिवशाह	प्रांजल यादव	सिद्धार्थ राठौर	हरिओम गुर्जर	निकिता पहाड़िया
आगरा	इंदौर	इंदौर	छिंदवाड़ा	छिंदवाड़ा	छिंदवाड़ा	छिंदवाड़ा	जयपुर	जयपुर
८६.२०%	८४.४०%	८४%	८३.८०%	८३.४०%	८३.४०%	८२.८०%	८२.४०%	८२%

१२वीं बोर्ड परीक्षा-परिणाम



णव अग्रवाल	देवर्षि पटेल	सूरज कुमार	शौर्य आनंद	योगेश अंजना	गौरव सदाफले	गोपाल राठौड़	विकास राजपूत	आशीष वार्ष्णेय
इंदौर	छिंदवाड़ा	छिंदवाड़ा	इंदौर	इंदौर	छिंदवाड़ा	अहमदाबाद	अहमदाबाद	आगरा
९२%	८८.८०%	८८.२०%	८७.४०%	८७.२०%	८५.६०%	९७.३८ PR	९६.३६ PR	७९.६०%

उपरोक्त गुरुकुलों के सिवाय सरकी लिमड़ी, गोंदिया, रजोकरी-दिल्ली, अलीगढ़, वाराणसी, दंतोड़, दमोह, [illegible]बाद, जम्मू, खिलचीपुर, बिनका, राजकोट, पिटोल, मोखड़ा, कोटगढ़, बस्ती आदि स्थानों पर भी गुरुकुल चलाये जा रहे हैं।

युवा सेवा संघ के तेजस्वी युवा शिविर

RNP. No. GAMC 1132/20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31
Licence to Post Without Pre-p
WPP No. 08/18-20
(Issued by CPMG UK. valid upto 31
Posting at Dehradun G.P.O. b
1st to 17th of every mont
Date of Publication: 1st July





'ऋषि प्रसाद' द्वारा सच्चे सुख का प्रसाद जन-जन तक पहुँचानेवाले पुण्य



विद्यार्थी अनुष्ठान शिविरों व विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों का लाभ लेते वि



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

दीपावली के पावन पर्व पर अहमदाबाद आश्रम में

विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर ५ से ११ नवम्

✲ बड़े साधक भी अनुष्ठान-शिविर का लाभ ले सकते हैं। ✲ जुलाई के पहले सप्ताह से ही ट्रेन के आरक्षण शुरू हो

सम्पर्क : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद आश्रम दूरभाष : (०७९) ३९८७७७४९/५०